

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड १५ / २२ · Volume 15 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह २४ — विस्तृत अध्ययन	९४९ प्रश्न
२. विदेह-सदेह २५ — विस्तृत अध्ययन	६६० प्रश्न
३. विदेह-सदेह २६ — विस्तृत अध्ययन	४४४ प्रश्न
४. विदेह-सदेह २७ — विस्तृत अध्ययन	१९८ प्रश्न
५. विदेह-सदेह २८ — विस्तृत अध्ययन	२४५ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह २४ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 3313 : विदेह-सदेह 24 — विद्या चन्द्र झा “बमबम”: साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु

१. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा/कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।

५. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विद्या चन्द्र झा “बमबम”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षा/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004मे विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/कथा आ “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3314 : विदेह-सदेह 24 — भावना मिश्रा (नई दिल्ली): गरीब लोक

११. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गरीब लोक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।

१५. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भावना मिश्रा (नई दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005मे भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3315 : विदेह-सदेह 24 — अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर): उधार

२१. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उधार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।

२५. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006मे अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3316 : विदेह-सदेह 24 — अमल कुमार झा (मधुबनी): हिरो

३१. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हिरो
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।

३५. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमल कुमार झा (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007मे अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3317 : विदेह-सदेह 24 — प्रभात कुमार कर्णः प्रकृति तांडव

४१. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रकृति तांडव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।

४६. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रभात कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008मे प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3318 : विदेह-सदेह 24 — डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी): २ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग

५१. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य

५५. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009मे डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि गद्य, बीहिनि कथा आ “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3319 : विदेह-सदेह 24 — निवेदिता झा (दिल्ली): दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग

६१. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।

६५. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक निवेदिता झा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010मे निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विवाह, सासु-बहू, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3320 : विदेह-सदेह 24 — ओम चौधरी (दिल्ली): सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल

७१. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।

७५. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम चौधरी (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011मे ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3321 : विदेह-सदेह 24 — कल्पना झा (पटना): २ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली

८१. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा

८५. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कल्पना झा (पटना), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012मे कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि गद्य, बीहिनि कथा आ “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3322 : विदेह-सदेह 24 — भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’: संजय करे अँडख

९१. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संजय करे अँडख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।

१५. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख"कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013मे भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क "संजय करे अँडख" प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ "संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3323 : विदेह-सदेह 24 — जगतंजन झा: बीहिनि कथा (संवाद)

१०१. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिनि कथा (संवाद)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।

१०५. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगतंजन झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतंरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014मे जगतंरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि गद्य, बीहिनि कथा आ “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3324 : विदेह-सदेह 24 — शेफालिका वर्मा (दिल्ली): हँ एहनो होयत छैक

१११. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हँ एहनो होयत छैक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।

११५. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शेफालिका वर्मा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015मे शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3325 : विदेह-सदेह 24 — प्रभाष अर्किचन: भरोस

१२१. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अर्किचनक “भरोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भरोस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अर्किचनक “भरोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।

१२५. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016मे प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3326 : विदेह-सदेह 24 — मुन्नी कामतः दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग

१३१. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा

१३५. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017मे मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि गद्य, बीहिनि कथा आ “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3327 : विदेह-सदेह 24 — मिसिदा: ट्राय एगेन लैटर

१४१. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ट्राय एगेन लैटर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।

१४५. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मिसिदा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018मे मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3328 : विदेह-सदेह 24 — मृणाल आशुतोष: आँदोलन

१५१. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आँदोलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।

१५५. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मृणाल आशुतोष, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आंदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019मे मृणाल आशुतोषक “आंदोलन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3329 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता):

१६१. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता), विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”कें विदेह-सदेह 24क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020मे ज्ञानवर्द्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3330 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: फैदाबला बिजनेस

१७०. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फैदाबला बिजनेस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।

१७४. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3331 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: लालदाइ

१८०. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लालदाइ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।

१८४. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3332 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: औकवर्ड ट्रेडिशन

१९०. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) औकवर्ड ट्रेडिशन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।

१९४. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3333 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: भोल्टेज

२००. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भोल्टेज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।

२०४. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०८. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्लेज” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भोल्लेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3334 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’

२१०. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।

२१४. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’”क विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१८. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3335 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: उषा मैडमक विदागरी

२२०. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उषा मैडमक विदागरी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।

२२४. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२८. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3336 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: दाबा

२३०. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दाबा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।

२३४. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३८. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3337 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: पराश्रित

२४०. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पराश्रित
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।

२४४. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४८. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3338 : विदेह-सदेह 24 — राजीव कर्ण: झूठक महत्व

२५०. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) झूठक महत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।

२५४. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५८. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029मे राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3339 : विदेह-सदेह 24 — जगदानन्द झा ‘मनु’: उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)

२६०. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।

२६४. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)"कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६८. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030मे जगदानन्द झा 'मनु'क "उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)" प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ "दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3340 : विदेह-सदेह 24 — विरेन्द्र कुमार झा: कोना बुझब

२७०. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक "कोना बुझब" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कोना बुझब
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक "कोना बुझब"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक "कोना बुझब"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक "कोना बुझब" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।

२७४. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक "कोना बुझब" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक "कोना बुझब"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विरेन्द्र कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७८. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031मे विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3341 : विदेह-सदेह 24 — मुन्ना जी (कलकत्ता): संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व

२८०. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा/विमर्श
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।

२८४. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी (कलकत्ता), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/विमर्श
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथा/विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८८. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032मे मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा/ विमर्श आ “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3342 : विदेह-सदेह 24 — अनामिका मिश्र: २ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास

२९०. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।

२९४. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनामिका मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९८. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033मे अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3343 : विदेह-सदेह 24 — नीरज कर्ण: बीहिन कथा- “छुच्छे”

३००. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा- “छुच्छे”
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।

३०४. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०८. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3344 : विदेह-सदेह 24 — सुनीता कुमारी: अनेरुआ

३१०. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनेरुआ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।

३१४. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१८. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035मे सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3345 : विदेह-सदेह 24 — सुनीता कुमारी: पोतीक बियाह

३२०. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोतीक बियाह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।

३२४. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२८. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036मे सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3346 : विदेह-सदेह 24 — —: ऑनलाइन क्लास

३३०. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: —क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ऑनलाइन क्लास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: —क “ऑनलाइन क्लास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: —क “ऑनलाइन क्लास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: —क “ऑनलाइन क्लास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।

३३४. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: -क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: -क “ऑनलाइन क्लास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक —, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: -क “ऑनलाइन क्लास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: -क “ऑनलाइन क्लास”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३८. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: -क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037मे -क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3347 : विदेह-सदेह 24 — -: ईनर

३४०. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: -क “ईनर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ईनर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: -क “ईनर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।

३४४. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक –, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४८. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038मे –क “ईनर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3348 : विदेह-सदेह 24 — अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी): मुखिया

३५०. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मुखिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।

३५४. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५८. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039मे अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3349 : विदेह-सदेह 24 — रति प्रभाकर (हिन्दी): अदकल जीह

३६०. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अदकल जीह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।

३६४. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रति प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६८. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040मे रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3350 : विदेह-सदेह 24 — सुरीश खन्ना (हिन्दी): घुरपेंट

३७०. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घुरपेंट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।

३७४. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुरीश खन्ना (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७८. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041मे सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3351 : विदेह-सदेह 24 — विजय 'विभोर' (हिन्दी): अन्नदाता

३८०. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्नदाता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात

३८४. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजय 'विभोर' (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क "अन्नदाता"कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८८. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3352 : विदेह-सदेह 24 — योगराज प्रभाकर (हिन्दी): ताल आ किल

३९०. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ताल आ किल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।

३९४. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९८. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3353 : विदेह-सदेह 24 — सदानन्द काशीराम (हिन्दी): नाचर चहलेबाक फयदा

४००. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नाचर चहलेबाक फयदा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।

४०४. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सदानन्द काशीराम (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०८. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044मे सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3354 : विदेह-सदेह 24 — डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली): बहिष्करण

४१०. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहिष्करण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।

४१४. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१८. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045मे डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3355 : विदेह-सदेह 24 — प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली): सौन्दर्य आ सभ्यता

४२०. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सौन्दर्य आ सभ्यता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लडका-लडकी खेल, भार डुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।

४२४. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लडका-लडकी खेल, भार डुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२८. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडका-लडकी खेल, भार दुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3356 : विदेह-सदेह 24 — हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली): २ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)

४३०. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।

४३४. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३८. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पछिमक आधिपत्य आस्था।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3357 : विदेह-सदेह 24 — तारा केसी (नेपाली): अपन परिचय

४४०. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपन परिचय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।

४४४. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४८. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3358 : विदेह-सदेह 24 — रीना शर्मा (नेपाली): चरित्र

४५०. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चरित्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।

४५४. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रीना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५८. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049मे रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3359 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी): तलाक

४६०. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तलाक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।

४६४. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६८. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050मे डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3360 : विदेह-सदेह 24 — रंजन बोहा (पंजाबी): करुगर सत्य

४७०. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) करुगर सत्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।

४७४. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”कँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७८. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051मे रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3361 : विदेह-सदेह 24 — जगदीश अर्जानी (पंजाबी): कथानक

४८०. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कथानक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।

४८४. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश अर्जानी (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८८. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052मे जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3362 : विदेह-सदेह 24 — जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी): अस्थिरता

४९०. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अस्थिरता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।

४९४. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९८. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053मे जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3363 : विदेह-सदेह 24 — दीपक बुदकी (उर्दू): जन्नत

५००. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जन्नत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।

५०४. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०८. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3364 : विदेह-सदेह 24 — मुबशिशर अली जैदी (उर्दू): ईनाम

५१०. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ईनाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।

५१४. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुबशिशर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१८. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055मे मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3365 : विदेह-सदेह 24 — इब्न आसी (उर्दू): फेर मनुक्खक की भेले?

५२०. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फेर मनुक्खक की भेले?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।

५२४. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२८. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3366 : विदेह-सदेह 24 — रतन सिंह (उर्दू): बिना शीर्षकक

५३०. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिना शीर्षकक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।

५३४. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३८. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3367 : विदेह-सदेह 24 — सच्चिदानन्द कर (ओडिया): तितली आ प्रेम

५४०. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तितली आ प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।

५४४. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४८. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3368 : विदेह-सदेह 24 — प्रज्ञा महान्ति (ओडिया): मेमोरीचिप्स

५५०. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मेमोरीचिप्स
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।

५५४. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५८. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3369 : विदेह-सदेह 24 — विनय कुमार दास (ओडिया): कर्मफल

५६०. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कर्मफल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।

५६४. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६८. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3370 : विदेह-सदेह 24 — गायत्री दास (ओडिया): बुझौँअलि

५७०. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बुझौँअलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।

५७४. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७८. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझाँअलि” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3371 : विदेह-सदेह 24 — मिनती प्रधान (ओडिया): संगी

५८०. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संगी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (अनुवाद)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।

५८४. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८८. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3372 : विदेह-सदेह 24 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग

५९०. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य (पद्य/गद्य)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गद्य/परिचय
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।

५९४. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य (पद्य/गद्य), उप-विधा गद्य/परिचय
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”कें विदेह-सदेह 24क गद्य (पद्य/गद्य)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गद्य/परिचयक रूपमे गद्य (पद्य/गद्य)-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९८. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएको उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि गद्य (पद्य/गद्य), गद्य/परिचय आ “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3373 : विदेह-सदेह 24 — आशीष अनचिन्हार: पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति

६००. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/पद्य/बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बहुविधा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य।

६०४. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य/पद्य/बीहिन कथा, उप-विधा बहुविधा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति”क विदेह-सदेह 24क गद्य/पद्य/बीहिन कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बहुविधाक रूपमे गद्य/पद्य/बीहिन कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०८. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064मे आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति” प्रविष्टि गद्य/पद्य/बीहिन कथा, बहुविधा आ “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3374 : विदेह-सदेह 24 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: गजल – किल्लु गजल (पद्य)

६१०. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल – किल्लु गजल (पद्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, 'अनिल' संकेत।

६१४. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, 'अनिल' संकेत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१८. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, 'अनिल' संकेत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3375 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि

६२०. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।

६२४. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, 'काज भेलै ओकर ओ दफा', 'हमरा सन केओ नीक', 'सबहक जय विसयाराम' आदि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” के विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२८. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3376 : विदेह-सदेह 24 — सुभाष कुमार कामत: फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम

६३०. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।

६३४. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष कुमार कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३८. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067मे सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3377 : विदेह-सदेह 24 — मुन्ना जी: बाल कविता- सुसंस्कार

६४०. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल कविता- सुसंस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।

६४४. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४८. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068मे मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3378 : विदेह-सदेह 24 — आशीष अनचिन्हारक: गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)

६५०. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।

६५४. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५८. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069मे आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3379 : विदेह-सदेह 24 — आभा झा: अस्मिता, महामानव

६६०. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अस्मिता, महामानव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।

६६४. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आभा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६८. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070मे आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3380 : विदेह-सदेह 24 — आकांक्षा कर्ण: बेटी हमर अभिमान

६७०. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेटी हमर अभिमान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।

६७४. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आकांक्षा कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७८. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071मे आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3381 : विदेह-सदेह 24 — सोनी कर्ण: बेटी

६८०. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेटी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।

६८४. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सोनी कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८८. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072मे सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3382 : विदेह-सदेह 24 — रागिनी प्रीत: सखी, (बीहिन कथाक पद्य)

६९०. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सखी, (बीहिन कथाक पद्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल सखी, याद, नेनपन।

६९४. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल सखी, याद, नेनपन।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रागिनी प्रीत, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९८. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073मे रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “बाल सखी, याद, नेनपन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3383 : विदेह-सदेह 24 — रागिनी मनोरथ: शिक्षा

७००. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शिक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०२. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षाक ज्योति, उद्धार।

७०४. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षाक ज्योति, उद्धार।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रागिनी मनोरथ, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०८. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074मे रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3384 : विदेह-सदेह 24 — प्रीति प्रभा (जमशेदपुर): मनोरथ

७१०. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनोरथ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।

७१४. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रीति प्रभा (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१८. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075मे प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3385 : विदेह-सदेह 24 — संतोष कुमार राय ‘बटोही’: गडबडझाला

७२०. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गडबडझाला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।

७२४. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला"कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२८. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3386 : विदेह-सदेह 24 — अनिल ठाकुर: आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)

७३०. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३२. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) देश/सामाजिक कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान

७३४. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनिल ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा देश/सामाजिक कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ देश/सामाजिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३८. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077मे अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि पद्य, देश/सामाजिक कविता आ “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3387 : विदेह-सदेह 24 — विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.): स्थन, योनि आ गर्भाशय

७४०. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्थन, योनि आ गर्भाशय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य (कविता)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४२. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नारीवादी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।

७४४. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.)क "स्थन, योनि आ गर्भाशय" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.)क "स्थन, योनि आ गर्भाशय"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.), विधा पद्य (कविता), उप-विधा नारीवादी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.)क "स्थन, योनि आ गर्भाशय" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.)क "स्थन, योनि आ गर्भाशय"केँ विदेह-सदेह 24क पद्य (कविता)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नारीवादी कविताक रूपमे पद्य (कविता)-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४८. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.)क "स्थन, योनि आ गर्भाशय" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078मे विभा रानी (मूल हिन्दी 'स्थन, योनि आ गर्भाशय' अनु.)क "स्थन, योनि आ गर्भाशय" प्रविष्टि पद्य (कविता), नारीवादी कविता आ "स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3388 : विदेह-सदेह 24 — कल्पना झा (बोकारो): किछु छुटि गेल

७५०. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क "किछु छुटि गेल" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु छुटि गेल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।

७५४. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कल्पना झा (बोकारो), विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५८. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079मे कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3389 : विदेह-सदेह 24 — ममता कर्ण (जमशेदपुर): बरसात

७६०. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बरसात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।

७६४. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ममता कर्ण (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६८. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080मे ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3390 : विदेह-सदेह 24 — —: निर्भर

७७०. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: —क “निर्भर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निर्भर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: —क “निर्भर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: —क “निर्भर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: —क “निर्भर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।

७७४. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: —क “निर्भर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७८. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081मे –क “निर्भर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3391 : विदेह-सदेह 24 — –: वक्ताब

७८०. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वक्ताब
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: -क “वक्ताब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।

७८४. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: -क “वक्ताब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: -क “वक्ताब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक —, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: -क “वक्ताब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: -क “वक्ताब”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८८. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: -क “वक्ताब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८९. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082मे -क “वक्ताब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3392 : विदेह-सदेह 24 — —: ताकल मजदूर

७९०. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ताकल मजदूर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।

७९४. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक -, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९७. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९८. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: -क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९९. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083मे –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3393 : विदेह-सदेह 24 — –: आरती (प्रकृति)

८००. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आरती (प्रकृति)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०१. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०२. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।

८०४. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०५. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०६. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” के विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०८. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०९. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084मे –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3394 : विदेह-सदेह 24 — सत्या ‘सुनील’ (सहरसा): उदंग

८१०. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उदंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८११. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१२. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।

८१४. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१५. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या 'सुनील' (सहरसा)क "उदंग"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्तों की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्या 'सुनील' (सहरसा), विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१६. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या 'सुनील' (सहरसा)क "उदंग" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या 'सुनील' (सहरसा)क "उदंग"क विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१८. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या 'सुनील' (सहरसा)क "उदंग" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१९. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085मे सत्या 'सुनील' (सहरसा)क "उदंग" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3395 : विदेह-सदेह 24 — —: उम्मीद

८२०. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: —क "उम्मीद" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उम्मीद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२१. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: —क "उम्मीद"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२२. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: —क "उम्मीद"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: -क “उम्मीद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।

८२४. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: -क “उम्मीद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२५. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: -क “उम्मीद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक —, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: -क “उम्मीद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२७. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: -क “उम्मीद”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२८. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: -क “उम्मीद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२९. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086मे -क “उम्मीद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3396 : विदेह-सदेह 24 — -: माँ

८३०. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क “माँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माँ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३१. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३२. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।

८३४. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३५. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक -, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३७. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ"कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३८. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: -क "माँ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३९. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087मे –क “माँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3397 : विदेह-सदेह 24 — आनन्द दास “गौरव”: संवेदना खत्म भ’ रहल अवि

८४०. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संवेदना खत्म भ’ रहल अवि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४१. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४२. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।

८४४. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४५. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आनन्द दास “गौरव”, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४६. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४८. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४९. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088मे आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3398 : विदेह-सदेह 24 — -: फागु

८५०. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: —क “फागु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फागु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५१. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: —क “फागु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५२. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: —क “फागु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लोक गीत / फगुआ
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: -क “फागु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।

८५४. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: -क “फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५५. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: -क “फागु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक —, विधा पद्य, उप-विधा लोक गीत / फगुआ
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५६. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: -क “फागु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: -क “फागु”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लोक गीत / फगुआक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५८. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: -क “फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५९. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089मे -क “फागु” प्रविष्टि पद्य, लोक गीत / फगुआ आ “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3399 : विदेह-सदेह 24 — सोनी दास: मौन

८६०. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मौन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६१. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६२. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६३. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।

८६४. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६५. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सोनी दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६८. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६९. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090मे सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3400 : विदेह-सदेह 24 — कंचन कंठ: आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति

८७०. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७१. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७२. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) स्तुति/देशभक्ति
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७३. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।

८७४. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७५. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कंचन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा स्तुति/देशभक्ति
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ स्तुति/देशभक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७८. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७९. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091मे कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि पद्य, स्तुति/देशभक्ति आ “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3401 : विदेह-सदेह 24 — महेन्द्र हजारी: से छि रामलोचन

८८०. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) से छि रामलोचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८१. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८२. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रशस्ति/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८३. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।

८८४. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८५. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेन्द्र हजारी, विधा पद्य, उप-विधा प्रशस्ति/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रशस्ति/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८८. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८९. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092मे महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि पद्य, प्रशस्ति/कविता आ “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3402 : विदेह-सदेह 24 — नारायणजी: श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)

८९०. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९१. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९२. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) स्मरण/संवेदना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।

८९४. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९५. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नारायणजी, विधा पद्य, उप-विधा स्मरण/संवेदना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरके स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ स्मरण/संवेदनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९८. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९९. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093मे नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि पद्य, स्मरण/संवेदना आ “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3403 : विदेह-सदेह 24 — विनोद कुमार झा: राम लोचन हमर प्रेरणा

९००. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राम लोचन हमर प्रेरणा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०१. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०२. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) श्रद्धांजलि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०३. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।

१०४. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा श्रद्धांजलि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094मे विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि पद्य, श्रद्धांजलि आ “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3404 : विदेह-सदेह 24 — बिनय भूषण: रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)

११०. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य (बहुभागी)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) श्रद्धांजलि / स्मृति
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।

११४. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिनय भूषण, विधा पद्य (बहुभागी), उप-विधा श्रद्धांजलि / स्मृति
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”कें विदेह-सदेह 24क पद्य (बहुभागी)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ श्रद्धांजलि / स्मृतिक रूपमे पद्य (बहुभागी)-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095मे बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि पद्य (बहुभागी), श्रद्धांजलि / स्मृति आ “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3405 : विदेह-सदेह 24 — –: आइ पृथ्वी दिवस अछि

१२०. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आइ पृथ्वी दिवस अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पर्यावरण/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।

१२४. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा पर्यावरण/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पर्यावरण/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096मे –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि पद्य, पर्यावरण/कविता आ “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3406 : विदेह-सदेह 24 — –: आखिर एना कियैक लागि रहल अछि

१३०. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आखिर एना कियैक लागि रहल अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कोरोना कालीन कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।

१३४. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कोरोना कालीन कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कोरोना कालीन कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097मे –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, कोरोना कालीन कविता आ “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3407 : विदेह-सदेह 24 — -: माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...

१४०. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आस्था/भक्ति कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आइजीईएसआइएमएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->

१४४. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आइजीईएसआइएमएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक -, विधा पद्य, उप-विधा आस्था/भक्ति कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”कें विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आस्था/भक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098मे -क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि पद्य, आस्था/भक्ति कविता आ “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय १ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु — सूचकांक पंक्ति 2004मे विद्या चन्द्र झा “बमबम”क प्रविष्टि “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” रूपमे देल अछि।
२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३. (C) समीक्षा/कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/कथा” अछि।
४. (D) बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” अछि।
५. (A) बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” रूपमे देखाइत अछि।
६. (B) लेखक विद्या चन्द्र झा “बमबम”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८. (D) ई पाठ समीक्षा/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०. (B) खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004मे विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/कथा आ “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११. (A) गरीब लोक — सूचकांक पंक्ति 2005मे भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क प्रविष्टि “गरीब लोक” रूपमे देल अछि।
१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१४. (D) कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” अछि।
१५. (A) कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” रूपमे देखाइत अछि।
१६. (B) लेखक भावना मिश्रा (नई दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०. (B) खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005मे भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१. (A) उधार — सूचकांक पंक्ति 2006मे अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क प्रविष्टि “उधार” रूपमे देल अछि।

२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

२४. (D) ‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” अछि।

२५. (A) ‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

२६. (B) लेखक अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३०. (B) खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006मे अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उधार” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘उधार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३१. (A) हिरो — सूचकांक पंक्ति 2007मे अमल कुमार झा (मधुबनी)क प्रविष्टि “हिरो” रूपमे देल अछि।

३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

३४. (D) बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” अछि।

३५. (A) बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” रूपमे देखाइत अछि।

३६. (B) लेखक अमल कुमार झा (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०. (B) खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007मे अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१. (A) प्रकृति तांडव — सूचकांक पंक्ति 2008मे प्रभात कुमार कर्णक प्रविष्टि “प्रकृति तांडव” रूपमे देल अछि।

४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

४४. (D) प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” अछि।

४५. (A) प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

४६. (B) लेखक प्रभात कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०. (B) खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008मे प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडव” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१. (A) २ टा बीहिन कथा : सुपक गोपी, अनुराग — सूचकांक पंक्ति 2009मे डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क प्रविष्टि “२ टा बीहिन कथा : सुपक गोपी, अनुराग” रूपमे देल अछि।

५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

५४. (D) ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” अछि।

५५. (A) ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” रूपमे देखाइत अछि।

५६. (B) लेखक डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६०. (B) खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009मे डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिन कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१. (A) दू टा बीहिन कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग — सूचकांक पंक्ति 2010मे निवेदिता झा (दिल्ली)क प्रविष्टि “दू टा बीहिन कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” रूपमे देल अछि।

६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

६४. (D) विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” अछि।

६५. (A) विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

६६. (B) लेखक निवेदिता झा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०. (B) खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010मे निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिन कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१. (A) सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल — सूचकांक पंक्ति 2011मे ओम चौधरी (दिल्ली)क प्रविष्टि “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” रूपमे देल अछि।

७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
७४. (D) वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच। — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” अछि।
७५. (A) वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” रूपमे देखाइत अछि।
७६. (B) लेखक ओम चौधरी (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०. (B) खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011मे ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१. (A) २ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली — सूचकांक पंक्ति 2012मे कल्पना झा (पटना)क प्रविष्टि “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” रूपमे देल अछि।
८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
८४. (D) पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” अछि।
८५. (A) पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
८६. (B) लेखक कल्पना झा (पटना), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०. (B) खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012मे कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिन कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९१. (A) संजय करे अँडख — सूचकांक पंक्ति 2013मे भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क प्रविष्टि “संजय करे अँडख” रूपमे देल अछि।
९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
९४. (D) संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” अछि।
९५. (A) संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
९६. (B) लेखक भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००. (B) खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013मे भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'क “संजय करे अँडख” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०१. (A) बीहिन कथा (संवाद) — सूचकांक पंक्ति 2014मे जगतंरंजन झाक प्रविष्टि “बीहिन कथा (संवाद)” रूपमे देल अछि।
१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१०४. (D) अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” अछि।
१०५. (A) अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।
१०६. (B) लेखक जगतंरंजन झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११०. (B) खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014मे जगतंरंजन झाक “बीहिन कथा (संवाद)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१११. (A) हँ एहनो होयत छैक — सूचकांक पंक्ति 2015मे शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क प्रविष्टि “हँ एहनो होयत छैक” रूपमे देल अछि।
११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
११४. (D) सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” अछि।
११५. (A) सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।
११६. (B) लेखक शेफालिका वर्मा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२०. (B) खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015मे शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२१. (A) भरोस — सूचकांक पंक्ति 2016मे प्रभाष अर्किचनक प्रविष्टि “भरोस” रूपमे देल अछि।
१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१२४. (D) एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” अछि।
१२५. (A) एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” रूपमे देखाइत अछि।
१२६. (B) लेखक प्रभाष अर्किचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०. (B) खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016मे प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१. (A) दू टा बीहिन कथा : 1. चसिया 2. दरेग — सूचकांक पंक्ति 2017मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “दू टा बीहिन कथा : 1. चसिया 2. दरेग” रूपमे देल अछि।
१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१३४. (D) ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” अछि।
१३५. (A) ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” रूपमे देखाइत अछि।
१३६. (B) लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017मे मुन्नी कामतक “दू टा बीहिन कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) ट्राय एगेन लैटर — सूचकांक पंक्ति 2018मे मिसिदाक प्रविष्टि “ट्राय एगेन लैटर” रूपमे देल अछि।
१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१४४. (D) कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” अछि।
१४५. (A) कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।
१४६. (B) लेखक मिसिदा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०. (B) खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018मे मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१. (A) आँदोलन — सूचकांक पंक्ति 2019मे मृणाल आशुतोषक प्रविष्टि “आँदोलन” रूपमे देल अछि।
१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५३. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

१५४. (D) किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” अछि।

१५५. (A) किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” रूपमे देखाइत अछि।

१५६. (B) लेखक मृणाल आशुतोष, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५८. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६०. (B) खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019मे मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2020मे ज्ञानवर्द्धन कंठ (कलकत्ता)क प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

१६२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

१६४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

१६५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ (कलकत्ता), विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६९. (B) खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020मे ज्ञानवर्द्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७०. (A) फैदाबला बिजनेस — सूचकांक पंक्ति 2021मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “फैदाबला बिजनेस” रूपमे देल अछि।

१७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

१७३. (D) बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” अछि।

१७४. (A) बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” रूपमे देखाइत अछि।

१७५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७९. (B) खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८०. (A) लालदाइ — सूचकांक पंक्ति 2022मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “लालदाइ” रूपमे देल अछि।
१८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१८३. (D) बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” अछि।
१८४. (A) बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” रूपमे देखाइत अछि।
१८५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९. (B) खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९०. (A) औकवर्ड ट्रेडिशन — सूचकांक पंक्ति 2023मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “औकवर्ड ट्रेडिशन” रूपमे देल अछि।
१९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
१९३. (D) बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” अछि।
१९४. (A) बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
१९५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९. (B) खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२००. (A) भोल्टेज — सूचकांक पंक्ति 2024मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “भोल्टेज” रूपमे देल अछि।
२०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२०३. (D) भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” अछि।
२०४. (A) भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” रूपमे देखाइत अछि।
२०५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०९. (B) खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्लेज” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भोल्लेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१०. (A) ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’ — सूचकांक पंक्ति 2025मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” रूपमे देल अछि।
२११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२१३. (D) राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।” अछि।
२१४. (A) राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।” रूपमे देखाइत अछि।
२१५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१९. (B) खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२०. (A) उषा मैडमक विदागरी — सूचकांक पंक्ति 2026मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “उषा मैडमक विदागरी” रूपमे देल अछि।
२२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२२३. (D) उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” अछि।
२२४. (A) उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” रूपमे देखाइत अछि।
२२५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२९. (B) खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३०. (A) दाबा — सूचकांक पंक्ति 2027मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “दाबा” रूपमे देल अछि।
२३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

२३३. (D) ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” अछि।
२३४. (A) ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” रूपमे देखाइत अछि।
२३५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३९. (B) खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४०. (A) पराश्रित — सूचकांक पंक्ति 2028मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “पराश्रित” रूपमे देल अछि।
२४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२४३. (D) बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” अछि।
२४४. (A) बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” रूपमे देखाइत अछि।
२४५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४९. (B) खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५०. (A) झूठक महत्व — सूचकांक पंक्ति 2029मे राजीव कर्णक प्रविष्टि “झूठक महत्व” रूपमे देल अछि।
२५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२५३. (D) सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” अछि।
२५४. (A) सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” रूपमे देखाइत अछि।
२५५. (B) लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५९. (B) खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029मे राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६०. (A) उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा) — सूचकांक पंक्ति 2030मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” रूपमे देल अछि।
२६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२६३. (D) दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” अछि।
२६४. (A) दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” रूपमे देखाइत अछि।
२६५. (B) लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६९. (B) खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७०. (A) कोना बुझब — सूचकांक पंक्ति 2031मे विरेन्द्र कुमार झाक प्रविष्टि “कोना बुझब” रूपमे देल अछि।
२७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२७३. (D) मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” अछि।
२७४. (A) मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” रूपमे देखाइत अछि।
२७५. (B) लेखक विरेन्द्र कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७९. (B) खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031मे विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८०. (A) संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व — सूचकांक पंक्ति 2032मे मुन्ना जी (कलकत्ता)क प्रविष्टि “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” रूपमे देल अछि।
२८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८२. (C) बीहिन कथा/विमर्श — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा/विमर्श” अछि।

२८३. (D) बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, 'श्री राज', सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, 'श्री राज', सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” अछि।
२८४. (A) बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, 'श्री राज', सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, 'श्री राज', सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” रूपमे देखाइत अछि।
२८५. (B) लेखक मुन्ना जी (कलकत्ता), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/विमर्श — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८७. (D) ई पाठ बीहिन कथा/विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८९. (B) खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032मे मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ़- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा/विमर्श आ “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, 'श्री राज', सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९०. (A) २ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास — सूचकांक पंक्ति 2033मे अनामिका मिश्रक प्रविष्टि “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” रूपमे देल अछि।
२९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
२९३. (D) ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” अछि।
२९४. (A) ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” रूपमे देखाइत अछि।
२९५. (B) लेखक अनामिका मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९९. (B) खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033मे अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३००. (A) बीहिन कथा- “छुछे” — सूचकांक पंक्ति 2034मे नीरज कर्णक प्रविष्टि “बीहिन कथा- “छुछे”” रूपमे देल अछि।
३०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३०३. (D) नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” अछि।
३०४. (A) नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।
३०५. (B) लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०९. (B) खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुछे”” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१०. (A) अनेरुआ — सूचकांक पंक्ति 2035मे सुनीता कुमारीक प्रविष्टि “अनेरुआ” रूपमे देल अछि।
३११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३१३. (D) वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” अछि।
३१४. (A) वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” रूपमे देखाइत अछि।
३१५. (B) लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१९. (B) खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035मे सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२०. (A) पोतीक बियाह — सूचकांक पंक्ति 2036मे सुनीता कुमारीक प्रविष्टि “पोतीक बियाह” रूपमे देल अछि।
३२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३२३. (D) पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” अछि।
३२४. (A) पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” रूपमे देखाइत अछि।
३२५. (B) लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२९. (B) खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036मे सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३०. (A) ऑनलाइन क्लास — सूचकांक पंक्ति 2037मे —क प्रविष्टि “ऑनलाइन क्लास” रूपमे देल अछि।
३३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३३३. (D) कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” अछि।

३३४. (A) कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” रूपमे देखाइत अछि।
३३५. (B) लेखक -, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३९. (B) खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037मे –क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४०. (A) ईनर — सूचकांक पंक्ति 2038मे –क प्रविष्टि “ईनर” रूपमे देल अछि।
३४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३४३. (D) रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” अछि।
३४४. (A) रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” रूपमे देखाइत अछि।
३४५. (B) लेखक -, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४९. (B) खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038मे –क “ईनर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५०. (A) मुखिया — सूचकांक पंक्ति 2039मे अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क प्रविष्टि “मुखिया” रूपमे देल अछि।
३५१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३५३. (D) रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” अछि।
३५४. (A) रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” रूपमे देखाइत अछि।
३५५. (B) लेखक अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५९. (B) खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039मे अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६०. (A) अदकल जीह — सूचकांक पंक्ति 2040मे रति प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “अदकल जीह” रूपमे देल अछि।
३६१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३६३. (D) पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” अछि।
३६४. (A) पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” रूपमे देखाइत अछि।
३६५. (B) लेखक रति प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६९. (B) खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040मे रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७०. (A) घुरपेंट — सूचकांक पंक्ति 2041मे सुरीश खन्ना (हिन्दी)क प्रविष्टि “घुरपेंट” रूपमे देल अछि।
३७१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३७३. (D) मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” अछि।
३७४. (A) मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
३७५. (B) लेखक सुरीश खन्ना (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७९. (B) खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041मे सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८०. (A) अन्नदाता — सूचकांक पंक्ति 2042मे विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क प्रविष्टि “अन्नदाता” रूपमे देल अछि।
३८१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३८३. (D) पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात — टिप्पणीक पहिल संकेत “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” अछि।
३८४. (A) पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” रूपमे देखाइत अछि।

३८५. (B) लेखक विजय 'विभोर' (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८९. (B) खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९०. (A) ताल आ किल — सूचकांक पंक्ति 2043मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “ताल आ किल” रूपमे देल अछि।
३९१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
३९३. (D) बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” अछि।
३९४. (A) बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” रूपमे देखाइत अछि।
३९५. (B) लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९९. (B) खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४००. (A) नाचर चहलेबाक फयदा — सूचकांक पंक्ति 2044मे सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क प्रविष्टि “नाचर चहलेबाक फयदा” रूपमे देल अछि।
४०१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
४०३. (D) भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” अछि।
४०४. (A) भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
४०५. (B) लेखक सदानन्द काशीराम (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०९. (B) खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044मे सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१०. (A) बहिष्करण — सूचकांक पंक्ति 2045मे डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क प्रविष्टि “बहिष्करण” रूपमे देल अछि।
४११. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
४१३. (D) कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” अछि।
४१४. (A) कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” रूपमे देखाइत अछि।
४१५. (B) लेखक डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१९. (B) खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045मे डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२०. (A) सौन्दर्य आ सभ्यता — सूचकांक पंक्ति 2046मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क प्रविष्टि “सौन्दर्य आ सभ्यता” रूपमे देल अछि।
४२१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
४२३. (D) लडका-लडकी खेल, भार दुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध। — टिप्पणीक पहिल संकेत “लडका-लडकी खेल, भार दुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” अछि।
४२४. (A) लडका-लडकी खेल, भार दुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लडका-लडकी खेल, भार दुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” रूपमे देखाइत अछि।
४२५. (B) लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२९. (B) खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडका-लडकी खेल, भार दुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३०. (A) २ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै) — सूचकांक पंक्ति 2047मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क प्रविष्टि “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” रूपमे देल अछि।
४३१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
४३३. (D) प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।” अछि।
४३४. (A) प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।” रूपमे देखाइत अछि।

४३५. (B) लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३९. (B) खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पछिमक आधिपत्य आस्था।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४०. (A) अपन परिचय — सूचकांक पंक्ति 2048मे तारा केसी (नेपाली)क प्रविष्टि “अपन परिचय” रूपमे देल अछि।
४४१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
४४३. (D) लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय। — टिप्पणीक पहिल संकेत “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” अछि।
४४४. (A) लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” रूपमे देखाइत अछि।
४४५. (B) लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४९. (B) खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५०. (A) चरित्र — सूचकांक पंक्ति 2049मे रीना शर्मा (नेपाली)क प्रविष्टि “चरित्र” रूपमे देल अछि।
४५१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
४५३. (D) ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” अछि।
४५४. (A) ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” रूपमे देखाइत अछि।
४५५. (B) लेखक रीना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५९. (B) खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049मे रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

੪੬੦. (A) **ਤਲਾਕ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2050ਮੇ ਡਾ. ਪ੍ਰਦੀਪ ਕੌਰਾ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਠਿ “ਤਲਾਕ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੪੬੧. (B) **ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)** — ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੈਂ “ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੪੬੨. (C) **ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸ਼ਵਰੂਪ “ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ” ਅਛਿ।
੪੬੩. (D) **ਦੂ ਵਯਕਤਿ – ਤਲਾਕ ਏਕ ਦਸ਼ਕ ਬਾਦ ਨੈ ਹੋ ਸਕਬਾਕ ਬਾਤ।** — ਟਿਘਣੀਕ ਪਹਿਲ ਸੰਕੇਤ “ਦੂ ਵਯਕਤਿ – ਤਲਾਕ ਏਕ ਦਸ਼ਕ ਬਾਦ ਨੈ ਹੋ ਸਕਬਾਕ ਬਾਤ।” ਅਛਿ।
੪੬੪. (A) **ਦੂ ਵਯਕਤਿ – ਤਲਾਕ ਏਕ ਦਸ਼ਕ ਬਾਦ ਨੈ ਹੋ ਸਕਬਾਕ ਬਾਤ।** — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿਘਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਦੂ ਵਯਕਤਿ – ਤਲਾਕ ਏਕ ਦਸ਼ਕ ਬਾਦ ਨੈ ਹੋ ਸਕਬਾਕ ਬਾਤ।” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਓਤ ਅਛਿ।
੪੬੫. (B) **ਲੇਖਕ ਡਾ. ਪ੍ਰਦੀਪ ਕੌਰਾ (ਪੰਜਾਬੀ), ਵਿਧਾ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਉਪ-ਵਿਧਾ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੈਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੪੬੬. (C) **ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿਘਣੀਕ ਕਾਰਣ।** — ਟਿਘਣੀ ਪਾਠਕਕੈਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੬੭. (D) **ਏ ਪਾਠ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)-ਸੰਸਾਰਸੈਂ ਜੁਡਲ ਅਛਿ।** — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸ਼ਵਰੂਪਕੈਂ ਸ਼ਪਠ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੪੬੮. (A) **ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤਕੈਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ।** — ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੬੯. (B) **ਖਣਡ 3359, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2050ਮੇ ਡਾ. ਪ੍ਰਦੀਪ ਕੌਰਾ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ “ਤਲਾਕ” ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ ਆ “ਦੂ ਵਯਕਤਿ – ਤਲਾਕ ਏਕ ਦਸ਼ਕ ਬਾਦ ਨੈ ਹੋ ਸਕਬਾਕ ਬਾਤ।”** ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 24ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਸ਼ਯਕੈਂ ਵਯਵਸ਼ਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ। — ਏ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੈਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੪੭੦. (A) **ਕਰੂਗਰ ਸਤਯ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2051ਮੇ ਰੰਜਨ ਬੋਹਾ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਠਿ “ਕਰੂਗਰ ਸਤਯ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੪੭੧. (B) **ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)** — ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੈਂ “ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੪੭੨. (C) **ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸ਼ਵਰੂਪ “ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ” ਅਛਿ।
੪੭੩. (D) **ਆਤੰਕਵਾਦੀ ਹਮਲਾ ਮੇ ਮਾਰਲ, ਸ਼ੋਕਸਭਾ, ਆਰਥਿਕ ਮੁਆਵਜਾ।** — ਟਿਘਣੀਕ ਪਹਿਲ ਸੰਕੇਤ “ਆਤੰਕਵਾਦੀ ਹਮਲਾ ਮੇ ਮਾਰਲ, ਸ਼ੋਕਸਭਾ, ਆਰਥਿਕ ਮੁਆਵਜਾ।” ਅਛਿ।
੪੭੪. (A) **ਆਤੰਕਵਾਦੀ ਹਮਲਾ ਮੇ ਮਾਰਲ, ਸ਼ੋਕਸਭਾ, ਆਰਥਿਕ ਮੁਆਵਜਾ।** — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿਘਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਆਤੰਕਵਾਦੀ ਹਮਲਾ ਮੇ ਮਾਰਲ, ਸ਼ੋਕਸਭਾ, ਆਰਥਿਕ ਮੁਆਵਜਾ।” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਓਤ ਅਛਿ।
੪੭੫. (B) **ਲੇਖਕ ਰੰਜਨ ਬੋਹਾ (ਪੰਜਾਬੀ), ਵਿਧਾ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਉਪ-ਵਿਧਾ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੈਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੪੭੬. (C) **ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿਘਣੀਕ ਕਾਰਣ।** — ਟਿਘਣੀ ਪਾਠਕਕੈਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੭੭. (D) **ਏ ਪਾਠ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)-ਸੰਸਾਰਸੈਂ ਜੁਡਲ ਅਛਿ।** — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸ਼ਵਰੂਪਕੈਂ ਸ਼ਪਠ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੪੭੮. (A) **ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤਕੈਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ।** — ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੭੯. (B) **ਖਣਡ 3360, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2051ਮੇ ਰੰਜਨ ਬੋਹਾ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ “ਕਰੂਗਰ ਸਤਯ” ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ ਆ “ਆਤੰਕਵਾਦੀ ਹਮਲਾ ਮੇ ਮਾਰਲ, ਸ਼ੋਕਸਭਾ, ਆਰਥਿਕ ਮੁਆਵਜਾ।”** ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 24ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਸ਼ਯਕੈਂ ਵਯਵਸ਼ਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ। — ਏ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੈਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੪੮੦. (A) **ਕਥਾਨਕ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2052ਮੇ ਜਗਦੀਸ਼ ਅਰਜਾਨੀ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਠਿ “ਕਥਾਨਕ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੪੮੧. (B) **ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)** — ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੈਂ “ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੪੮੨. (C) **ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸ਼ਵਰੂਪ “ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ” ਅਛਿ।
੪੮੩. (D) **ਲੇਖਕ ਕਥਾ-ਦ੍ਰਸ਼ਯ ਦੇਖਿ ਉਤਸਾਹ, ਕੀਚਡ ਫਸਲ ਗਾਡੀ।** — ਟਿਘਣੀਕ ਪਹਿਲ ਸੰਕੇਤ “ਲੇਖਕ ਕਥਾ-ਦ੍ਰਸ਼ਯ ਦੇਖਿ ਉਤਸਾਹ, ਕੀਚਡ ਫਸਲ ਗਾਡੀ।” ਅਛਿ।
੪੮੪. (A) **ਲੇਖਕ ਕਥਾ-ਦ੍ਰਸ਼ਯ ਦੇਖਿ ਉਤਸਾਹ, ਕੀਚਡ ਫਸਲ ਗਾਡੀ।** — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿਘਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਲੇਖਕ ਕਥਾ-ਦ੍ਰਸ਼ਯ ਦੇਖਿ ਉਤਸਾਹ, ਕੀਚਡ ਫਸਲ ਗਾਡੀ।” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਓਤ ਅਛਿ।
੪੮੫. (B) **ਲੇਖਕ ਜਗਦੀਸ਼ ਅਰਜਾਨੀ (ਪੰਜਾਬੀ), ਵਿਧਾ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਉਪ-ਵਿਧਾ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੈਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।

੪੮੬. (C) **ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਕਾਰ**। — ਟਿੱਪਣੀ ਪਾਠਕੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੮੭. (D) **ਈ ਪਾਠ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)-ਸੰਸਾਰਸੱ ਜੁਡਲ ਅਛਿ।** — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸਵਰੂਪੋਂ ਸਪੁਸ਼ਟ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੪੮੮. (A) **ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਅਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ।** — ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੮੯. (B) **ਖਣਡ 3361, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2052ਮੇ ਜਗਦੀਸ਼ ਅਰਜਾਨੀ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ “ਕਥਾਨਕ” ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ ਆ “ਲੇਖਕ ਕਥਾ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਦੇਖਿ ਉਤਸਾਹ, ਕੀਚੜ ਫਸਲ ਗਾਡੀ।” ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 24ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਿਸ਼ਯੋਂ ਵਧਵਸ਼ਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।** — ਈ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿਕੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੪੯੦. (A) **ਅਸਥਿਰਤਾ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2053ਮੇ ਜੰਗਬਹਾਦੁਰ ਸਿੰਹ ਧੁਮ੍ਧ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ “ਅਸਥਿਰਤਾ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੪੯੧. (B) **ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)** — ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮ੍ਧਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿਕੋਂ “ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੪੯੨. (C) **ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮ੍ਧਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਵਰੂਪ “ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ” ਅਛਿ।
੪੯੩. (D) **ਮੁਆਵਜਾ, ਹਯਾਰਾਕ ਪਤਨੀ-ਪੁਤ੍ਰ, ਦਯਾ-ਬੀਖ ਪਰ ਸੰਵਾਦ।** — ਟਿੱਪਣੀਕ ਪਹਿਲ ਸੰਕੇਤ “ਮੁਆਵਜਾ, ਹਯਾਰਾਕ ਪਤਨੀ-ਪੁਤ੍ਰ, ਦਯਾ-ਬੀਖ ਪਰ ਸੰਵਾਦ।” ਅਛਿ।
੪੯੪. (A) **ਮੁਆਵਜਾ, ਹਯਾਰਾਕ ਪਤਨੀ-ਪੁਤ੍ਰ, ਦਯਾ-ਬੀਖ ਪਰ ਸੰਵਾਦ।** — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਮੁਆਵਜਾ, ਹਯਾਰਾਕ ਪਤਨੀ-ਪੁਤ੍ਰ, ਦਯਾ-ਬੀਖ ਪਰ ਸੰਵਾਦ।” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਝਤ ਅਛਿ।
੪੯੫. (B) **ਲੇਖਕ ਜੰਗਬਹਾਦੁਰ ਸਿੰਹ ਧੁਮ੍ਧ (ਪੰਜਾਬੀ), ਵਿਧਾ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਉਪ-ਵਿਧਾ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੪੯੬. (C) **ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਕਾਰ**। — ਟਿੱਪਣੀ ਪਾਠਕੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੯੭. (D) **ਈ ਪਾਠ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)-ਸੰਸਾਰਸੱ ਜੁਡਲ ਅਛਿ।** — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸਵਰੂਪੋਂ ਸਪੁਸ਼ਟ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੪੯੮. (A) **ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਅਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ।** — ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੪੯੯. (B) **ਖਣਡ 3362, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2053ਮੇ ਜੰਗਬਹਾਦੁਰ ਸਿੰਹ ਧੁਮ੍ਧ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ “ਅਸਥਿਰਤਾ” ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ ਆ “ਮੁਆਵਜਾ, ਹਯਾਰਾਕ ਪਤਨੀ-ਪੁਤ੍ਰ, ਦਯਾ-ਬੀਖ ਪਰ ਸੰਵਾਦ।” ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 24ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਿਸ਼ਯੋਂ ਵਧਵਸ਼ਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।** — ਈ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿਕੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੫੦੦. (A) **ਜਨਨਤ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2054ਮੇ ਦੀਪਕ ਬੁਦਕੀ (ਉਰਦੂ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ “ਜਨਨਤ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੫੦੧. (B) **ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)** — ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮ੍ਧਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿਕੋਂ “ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੫੦੨. (C) **ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮ੍ਧਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਵਰੂਪ “ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ” ਅਛਿ।
੫੦੩. (D) **ਜਨਨਤਕ ਦੁਆਰ, ਆਤੰਕੀ-ਹਿੰਸਾਕ ਕਰਮ ਪਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ।** — ਟਿੱਪਣੀਕ ਪਹਿਲ ਸੰਕੇਤ “ਜਨਨਤਕ ਦੁਆਰ, ਆਤੰਕੀ-ਹਿੰਸਾਕ ਕਰਮ ਪਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ।” ਅਛਿ।
੫੦੪. (A) **ਜਨਨਤਕ ਦੁਆਰ, ਆਤੰਕੀ-ਹਿੰਸਾਕ ਕਰਮ ਪਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ।** — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਜਨਨਤਕ ਦੁਆਰ, ਆਤੰਕੀ-ਹਿੰਸਾਕ ਕਰਮ ਪਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ।” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਝਤ ਅਛਿ।
੫੦੫. (B) **ਲੇਖਕ ਦੀਪਕ ਬੁਦਕੀ (ਉਰਦੂ), ਵਿਧਾ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਉਪ-ਵਿਧਾ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੫੦੬. (C) **ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਕਾਰ**। — ਟਿੱਪਣੀ ਪਾਠਕੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੫੦੭. (D) **ਈ ਪਾਠ ਬੀਹਿਨ ਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)-ਸੰਸਾਰਸੱ ਜੁਡਲ ਅਛਿ।** — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸਵਰੂਪੋਂ ਸਪੁਸ਼ਟ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੫੦੮. (A) **ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਅਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ।** — ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੫੦੯. (B) **ਖਣਡ 3363, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2054ਮੇ ਦੀਪਕ ਬੁਦਕੀ (ਉਰਦੂ)ਕ “ਜਨਨਤ” ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ), ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ ਆ “ਜਨਨਤਕ ਦੁਆਰ, ਆਤੰਕੀ-ਹਿੰਸਾਕ ਕਰਮ ਪਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ।” ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 24ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਿਸ਼ਯੋਂ ਵਧਵਸ਼ਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।** — ਈ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿਕੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੫੧੦. (A) **ਝੰਨਾਮ** — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2055ਮੇ ਮੁਬਸ਼ਿਸ਼ਰ ਅਲੀ ਜੈਦੀ (ਉਰਦੂ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿ “ਝੰਨਾਮ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੫੧੧. (B) **ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)** — ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮ੍ਧਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਿਕੋਂ “ਗਧ (ਅਨੁਵਾਦ)” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੫੧੨. (C) **ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ** — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ਼ਤਮ੍ਧਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਵਰੂਪ “ਬੀਹਿਨ ਕਥਾ” ਅਛਿ।

५१३. (D) सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” अछि।
५१४. (A) सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” रूपमे देखाइत अछि।
५१५. (B) लेखक मुबशिशर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१९. (B) खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055मे मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२०. (A) फेर मनुक्खक की भेले? — सूचकांक पंक्ति 2056मे इब्न आसी (उर्दू)क प्रविष्टि “फेर मनुक्खक की भेले?” रूपमे देल अछि।
५२१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५२३. (D) नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित। — टिप्पणीक पहिल संकेत “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” अछि।
५२४. (A) नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” रूपमे देखाइत अछि।
५२५. (B) लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२९. (B) खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३०. (A) बिना शीर्षकक — सूचकांक पंक्ति 2057मे रतन सिंह (उर्दू)क प्रविष्टि “बिना शीर्षकक” रूपमे देल अछि।
५३१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५३३. (D) उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” अछि।
५३४. (A) उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
५३५. (B) लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३९. (B) खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४०. (A) तितली आ प्रेम — सूचकांक पंक्ति 2058मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क प्रविष्टि “तितली आ प्रेम” रूपमे देल अछि।
५४१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५४३. (D) तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” अछि।
५४४. (A) तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” रूपमे देखाइत अछि।
५४५. (B) लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४९. (B) खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५०. (A) मेमोरीचिप्स — सूचकांक पंक्ति 2059मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क प्रविष्टि “मेमोरीचिप्स” रूपमे देल अछि।
५५१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५५३. (D) पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” अछि।
५५४. (A) पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” रूपमे देखाइत अछि।
५५५. (B) लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५९. (B) खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६०. (A) कर्मफल — सूचकांक पंक्ति 2060मे विनय कुमार दास (ओडिया)क प्रविष्टि “कर्मफल” रूपमे देल अछि।
५६१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५६३. (D) बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” अछि।

५६४. (A) बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” रूपमे देखाइत अछि।
५६५. (B) लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६९. (B) खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७०. (A) बुझौँअलि — सूचकांक पंक्ति 2061मे गायत्री दास (ओडिया)क प्रविष्टि “बुझौँअलि” रूपमे देल अछि।
५७१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५७३. (D) ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” अछि।
५७४. (A) ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।
५७५. (B) लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७९. (B) खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८०. (A) संगी — सूचकांक पंक्ति 2062मे मिनती प्रधान (ओडिया)क प्रविष्टि “संगी” रूपमे देल अछि।
५८१. (B) गद्य (अनुवाद) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८२. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५८३. (D) कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” अछि।
५८४. (A) कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” रूपमे देखाइत अछि।
५८५. (B) लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८७. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८९. (B) खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५९०. (A) अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग — सूचकांक पंक्ति 2063मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” रूपमे देल अछि।
५९१. (B) गद्य (पद्य/गद्य) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (पद्य/गद्य)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९२. (C) गद्य/परिचय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गद्य/परिचय” अछि।
५९३. (D) ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” अछि।
५९४. (A) ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” रूपमे देखाइत अछि।
५९५. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य (पद्य/गद्य), उप-विधा गद्य/परिचय — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९७. (D) ई पाठ गद्य/परिचयक रूपमे गद्य (पद्य/गद्य)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९९. (B) खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि गद्य (पद्य/गद्य), गद्य/परिचय आ “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६००. (A) पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति — सूचकांक पंक्ति 2064मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति” रूपमे देल अछि।
६०१. (B) गद्य/पद्य/बीहिन कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य/बीहिन कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०२. (C) बहुविधा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बहुविधा” अछि।
६०३. (D) रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य।” अछि।
६०४. (A) रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
६०५. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य/पद्य/बीहिन कथा, उप-विधा बहुविधा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०७. (D) ई पाठ बहुविधाक रूपमे गद्य/पद्य/बीहिन कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०९. (B) खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064मे आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पढ़ति” प्रविष्टि गद्य/पद्य/बीहिन कथा, बहुविधा आ “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लौकडाउन-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१०. (A) गजल – किल्लु गजल (पद्य) — सूचकांक पंक्ति 2065मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” रूपमे देल अछि।
६११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६१२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

६१३. (D) छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” अछि।

६१४. (A) छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” रूपमे देखाइत अछि।

६१५. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६१७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६१९. (B) खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६२०. (A) गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि — सूचकांक पंक्ति 2066मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” रूपमे देल अछि।

६२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

६२३. (D) बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” अछि।

६२४. (A) बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

६२५. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६२७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६२९. (B) खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६३०. (A) फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम — सूचकांक पंक्ति 2067मे सुभाष कुमार कामतक प्रविष्टि “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” रूपमे देल अछि।

६३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६३३. (D) फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल। — टिप्पणीक पहिल संकेत “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” अछि।

६३४. (A) फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” रूपमे देखाइत अछि।

६३५. (B) लेखक सुभाष कुमार कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३९. (B) खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067मे सुभाष कुमार कामतक “फाटल ज़िंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४०. (A) बाल कविता- सुसंस्कार — सूचकांक पंक्ति 2068मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “बाल कविता- सुसंस्कार” रूपमे देल अछि।
६४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।
६४३. (D) बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” अछि।
६४४. (A) बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” रूपमे देखाइत अछि।
६४५. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४९. (B) खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068मे मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५०. (A) गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी) — सूचकांक पंक्ति 2069मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” रूपमे देल अछि।
६५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
६५३. (D) विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल। — टिप्पणीक पहिल संकेत “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” अछि।
६५४. (A) विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” रूपमे देखाइत अछि।
६५५. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५९. (B) खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069मे आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६६०. (A) अस्मिता, महामानव — सूचकांक पंक्ति 2070मे आभा झाक प्रविष्टि “अस्मिता, महामानव” रूपमे देल अछि।

६६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६६३. (D) स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” अछि।

६६४. (A) स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” रूपमे देखाइत अछि।

६६५. (B) लेखक आभा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६६९. (B) खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070मे आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६७०. (A) बेटी हमर अभिमान — सूचकांक पंक्ति 2071मे आकांक्षा कर्णक प्रविष्टि “बेटी हमर अभिमान” रूपमे देल अछि।

६७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६७३. (D) बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” अछि।

६७४. (A) बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” रूपमे देखाइत अछि।

६७५. (B) लेखक आकांक्षा कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६७९. (B) खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071मे आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६८०. (A) बेटी — सूचकांक पंक्ति 2072मे सोनी कर्णक प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।

६८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६८३. (D) बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” अछि।

६८४. (A) बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” रूपमे देखाइत अछि।

६८५. (B) लेखक सोनी कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८९. (B) खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072मे सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६९०. (A) सखी, (बीहिन कथाक पद्य) — सूचकांक पंक्ति 2073मे रागिनी प्रीतक प्रविष्टि “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” रूपमे देल अछि।
६९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६९२. (C) गीत/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।
६९३. (D) बाल सखी, याद, नेनपन। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल सखी, याद, नेनपन।” अछि।
६९४. (A) बाल सखी, याद, नेनपन। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल सखी, याद, नेनपन।” रूपमे देखाइत अछि।
६९५. (B) लेखक रागिनी प्रीत, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६९७. (D) ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६९९. (B) खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073मे रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “बाल सखी, याद, नेनपन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७००. (A) शिक्षा — सूचकांक पंक्ति 2074मे रागिनी मनोरथक प्रविष्टि “शिक्षा” रूपमे देल अछि।
७०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
७०३. (D) शिक्षाक ज्योति, उद्धार। — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” अछि।
७०४. (A) शिक्षाक ज्योति, उद्धार। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” रूपमे देखाइत अछि।
७०५. (B) लेखक रागिनी मनोरथ, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०९. (B) खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074मे रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१०. (A) मनोरथ — सूचकांक पंक्ति 2075मे प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क प्रविष्टि “मनोरथ” रूपमे देल अछि।
७११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
७१३. (D) माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” अछि।
७१४. (A) माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” रूपमे देखाइत अछि।
७१५. (B) लेखक प्रीति प्रभा (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७१९. (B) खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075मे प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७२०. (A) गडबडझाला — सूचकांक पंक्ति 2076मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क प्रविष्टि “गडबडझाला” रूपमे देल अछि।
७२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
७२३. (D) पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।” अछि।
७२४. (A) पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।” रूपमे देखाइत अछि।
७२५. (B) लेखक संतोष कुमार राय ‘बटोही’, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२९. (B) खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३०. (A) आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता) — सूचकांक पंक्ति 2077मे अनिल ठाकुरक प्रविष्टि “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” रूपमे देल अछि।
७३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३२. (C) देश/सामाजिक कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “देश/सामाजिक कविता” अछि।
७३३. (D) मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” अछि।
७३४. (A) मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।
७३५. (B) लेखक अनिल ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा देश/सामाजिक कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७३७. (D) ई पाठ देश/सामाजिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३९. (B) खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077मे अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि पद्य, देश/सामाजिक कविता आ “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४०. (A) स्थन, योनि आ गर्भाशय — सूचकांक पंक्ति 2078मे विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क प्रविष्टि “स्थन, योनि आ गर्भाशय” रूपमे देल अछि।
७४१. (B) पद्य (कविता) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य (कविता)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७४२. (C) नारीवादी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारीवादी कविता” अछि।
७४३. (D) स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” अछि।

७४४. (A) स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” रूपमे देखाइत अछि।
७४५. (B) लेखक विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.), विधा पद्य (कविता), उप-विधा नारीवादी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४७. (D) ई पाठ नारीवादी कविताक रूपमे पद्य (कविता)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७४९. (B) खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078मे विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टि पद्य (कविता), नारीवादी कविता आ “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५०. (A) किछु छुटि गेल — सूचकांक पंक्ति 2079मे कल्पना झा (बोकारो)क प्रविष्टि “किछु छुटि गेल” रूपमे देल अछि।
७५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
७५३. (D) गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” अछि।
७५४. (A) गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” रूपमे देखाइत अछि।
७५५. (B) लेखक कल्पना झा (बोकारो), विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७५९. (B) खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079मे कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७६०. (A) बरसात — सूचकांक पंक्ति 2080मे ममता कर्ण (जमशेदपुर)क प्रविष्टि “बरसात” रूपमे देल अछि।
७६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
७६३. (D) वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” अछि।
७६४. (A) वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।
७६५. (B) लेखक ममता कर्ण (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६९. (B) खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080मे ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अछि।

७७०. (A) निर्भर — सूचकांक पंक्ति 2081मे –क प्रविष्टि “निर्भर” रूपमे देल अछि।

७७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७७३. (D) जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” अछि।

७७४. (A) जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” रूपमे देखाइत अछि।

७७५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७७९. (B) खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081मे –क “निर्भर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७८०. (A) वक्ताब — सूचकांक पंक्ति 2082मे –क प्रविष्टि “वक्ताब” रूपमे देल अछि।

७८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७८३. (D) किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” अछि।

७८४. (A) किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” रूपमे देखाइत अछि।

७८५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७८९. (B) खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082मे –क “वक्ताब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७९०. (A) ताकल मजदूर — सूचकांक पंक्ति 2083मे –क प्रविष्टि “ताकल मजदूर” रूपमे देल अछि।

७९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७९३. (D) प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” अछि।

७९४. (A) प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” रूपमे देखाइत अछि।

७९५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७९९. (B) खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083मे –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८००. (A) आरती (प्रकृति) — सूचकांक पंक्ति 2084मे –क प्रविष्टि “आरती (प्रकृति)” रूपमे देल अछि।
८०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८०३. (D) प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” अछि।
८०४. (A) प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” रूपमे देखाइत अछि।
८०५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०९. (B) खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084मे –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१०. (A) उदंग — सूचकांक पंक्ति 2085मे सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क प्रविष्टि “उदंग” रूपमे देल अछि।
८११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८१३. (D) लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” अछि।
८१४. (A) लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” रूपमे देखाइत अछि।
८१५. (B) लेखक सत्या ‘सुनील’ (सहरसा), विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८१९. (B) खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085मे सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८२०. (A) उम्मीद — सूचकांक पंक्ति 2086मे –क प्रविष्टि “उम्मीद” रूपमे देल अछि।
८२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८२३. (D) किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” अछि।
८२४. (A) किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” रूपमे देखाइत अछि।
८२५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२९. (B) खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086मे –क “उम्मीद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३०. (A) माँ — सूचकांक पंक्ति 2087मे –क प्रविष्टि “माँ” रूपमे देल अछि।
८३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८३३. (D) मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” अछि।
८३४. (A) मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” रूपमे देखाइत अछि।
८३५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३९. (B) खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087मे –क “माँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४०. (A) संवेदना खत्म भ’ रहल अवि — सूचकांक पंक्ति 2088मे आनन्द दास “गौरव”क प्रविष्टि “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” रूपमे देल अछि।
८४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८४३. (D) कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” अछि।
८४४. (A) कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” रूपमे देखाइत अछि।
८४५. (B) लेखक आनन्द दास “गौरव”, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८४९. (B) खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088मे आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८५०. (A) फागु — सूचकांक पंक्ति 2089मे –क प्रविष्टि “फागु” रूपमे देल अछि।
८५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८५२. (C) लोक गीत / फगुआ — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक गीत / फगुआ” अछि।
८५३. (D) होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” अछि।
८५४. (A) होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” रूपमे देखाइत अछि।
८५५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा लोक गीत / फगुआ — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८५७. (D) ई पाठ लोक गीत / फगुआक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८५९. (B) खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089मे —क “फागु” प्रविष्टि पद्य, लोक गीत / फगुआ आ “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८६०. (A) मौन — सूचकांक पंक्ति 2090मे सोनी दासक प्रविष्टि “मौन” रूपमे देल अछि।
८६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८६३. (D) मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” अछि।
८६४. (A) मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।
८६५. (B) लेखक सोनी दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६९. (B) खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090मे सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७०. (A) आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति — सूचकांक पंक्ति 2091मे कंचन कंठक प्रविष्टि “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” रूपमे देल अछि।
८७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७२. (C) स्तुति/देशभक्ति — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्तुति/देशभक्ति” अछि।
८७३. (D) माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” अछि।
८७४. (A) माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” रूपमे देखाइत अछि।
८७५. (B) लेखक कंचन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा स्तुति/देशभक्ति — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७७. (D) ई पाठ स्तुति/देशभक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८७९. (B) खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091मे कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि पद्य, स्तुति/देशभक्ति आ “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८८०. (A) से छि रामलोचन — सूचकांक पंक्ति 2092मे महेन्द्र हजारीक प्रविष्टि “से छि रामलोचन” रूपमे देल अछि।
८८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८८२. (C) प्रशस्ति/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रशस्ति/कविता” अछि।
८८३. (D) रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” अछि।

८८४. (A) रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” रूपमे देखाइत अछि।
८८५. (B) लेखक महेन्द्र हजारी, विधा पद्य, उप-विधा प्रशस्ति/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८७. (D) ई पाठ प्रशस्ति/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८९. (B) खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092मे महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि पद्य, प्रशस्ति/कविता आ “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८९०. (A) श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला) — सूचकांक पंक्ति 2093मे नारायणजीक प्रविष्टि “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” रूपमे देल अछि।
८९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९२. (C) स्मरण/संवेदना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्मरण/संवेदना” अछि।
८९३. (D) चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” अछि।
८९४. (A) चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” रूपमे देखाइत अछि।
८९५. (B) लेखक नारायणजी, विधा पद्य, उप-विधा स्मरण/संवेदना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९७. (D) ई पाठ स्मरण/संवेदनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९९. (B) खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093मे नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि पद्य, स्मरण/संवेदना आ “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९००. (A) राम लोचन हमर प्रेरणा — सूचकांक पंक्ति 2094मे विनोद कुमार झाक प्रविष्टि “राम लोचन हमर प्रेरणा” रूपमे देल अछि।
९०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९०२. (C) श्रद्धांजलि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धांजलि” अछि।
९०३. (D) रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” अछि।
९०४. (A) रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” रूपमे देखाइत अछि।
९०५. (B) लेखक विनोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा श्रद्धांजलि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९०७. (D) ई पाठ श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०९. (B) खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094मे विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि पद्य, श्रद्धांजलि आ “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-

प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११०. (A) रामलोचन ठाकूरक विवरकोना आ... (1-5) — सूचकांक पंक्ति 2095मे बिनय भूषणक प्रविष्टि “रामलोचन ठाकूरक विवरकोना आ... (1-5)” रूपमे देल अछि।

१११. (B) पद्य (बहुभागी) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “पद्य (बहुभागी)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११२. (C) श्रद्धांजलि / स्मृति — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धांजलि / स्मृति” अछि।

११३. (D) रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” अछि।

११४. (A) रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” रूपमे देखाइत अछि।

११५. (B) लेखक बिनय भूषण, विधा पद्य (बहुभागी), उप-विधा श्रद्धांजलि / स्मृति — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११७. (D) ई पाठ श्रद्धांजलि / स्मृतिक रूपमे पद्य (बहुभागी)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११९. (B) खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095मे बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विवरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि पद्य (बहुभागी), श्रद्धांजलि / स्मृति आ “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२०. (A) आइ पृथ्वी दिवस अछि — सूचकांक पंक्ति 2096मे –क प्रविष्टि “आइ पृथ्वी दिवस अछि” रूपमे देल अछि।

१२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२२. (C) पर्यावरण/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पर्यावरण/कविता” अछि।

१२३. (D) पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” अछि।

१२४. (A) पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” रूपमे देखाइत अछि।

१२५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा पर्यावरण/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२७. (D) ई पाठ पर्यावरण/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२९. (B) खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096मे –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि पद्य, पर्यावरण/कविता आ “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३०. (A) आखिर एना कियैक लागि रहल अछि — सूचकांक पंक्ति 2097मे –क प्रविष्टि “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” रूपमे देल अछि।

१३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३२. (C) कोरोना कालीन कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कोरोना कालीन कविता” अछि।

१३३. (D) सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” अछि।

१३४. (A) सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

१३५. (B) लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कोरोना कालीन कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३७. (D) ई पाठ कोरोना कालीन कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३९. (B) खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097मे –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, कोरोना कालीन कविता आ “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४०. (A) माँक आँचरक स्नेह भरल बासना... — सूचकांक पंक्ति 2098मे –क प्रविष्टि “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” रूपमे देल अछि।

१४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४२. (C) आस्था/भक्ति कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आस्था/भक्ति कविता” अछि।

१४३. (D) आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।--> — टिप्पणीक पहिल संकेत “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” अछि।

१४४. (A) आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।--> — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” रूपमे देखाइत अछि।

१४५. (B) लेखक -, विधा पद्य, उप-विधा आस्था/भक्ति कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४७. (D) ई पाठ आस्था/भक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४९. (B) खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098मे –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि पद्य, आस्था/भक्ति कविता आ “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह २५ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २४ : विदेह-सदेह २५ — सझिया रोपनि समीक्षा

१. 'सझिया रोपनि' बीहनि कथा-संग्रहक सम्पादक के छथि?
 - (A) डा. प्रमोद कुमार
 - (B) गजेन्द्र ठाकुर
 - (C) विभा रानी
 - (D) कोनो नहि
२. 'सझिया रोपनि' मे कतेक बीहनि कथा-लेखकक रचना सम्मिलित अछि?
 - (A) ४३ टा
 - (B) दस टा
 - (C) सय टा
 - (D) पाँच टा
३. 'सझिया रोपनि' मे कुल कतेक बीहनि कथा संकलित अछि?
 - (A) ८६ टा
 - (B) ४३ टा
 - (C) सय टा
 - (D) दस टा
४. 'सझिया रोपनि' मे महिला बीहनि कथाकारक संख्या केहन कहल गेल?
 - (A) आह्लादकारी
 - (B) अत्यन्त कम
 - (C) शून्य
 - (D) कोनो नहि
५. डॉ. प्रमोद कुमार अनुसार बीहनि कथाक नपना कतेक शब्दक होइत अछि?
 - (A) कठोर रूपसँ १०० शब्द
 - (B) ५० शब्द
 - (C) ५०० शब्द
 - (D) कोनो नहि
६. 'सझिया रोपनि' मे घनश्याम घनेरोक बीहनि कथाक नाम की?
 - (A) अछोप
 - (B) फोकस!
 - (C) कुशल
 - (D) कोनो नहि
७. 'सझिया रोपनि' मे मुन्नाजीक बीहनि कथाक नाम की?
 - (A) फोकस!
 - (B) अछोप
 - (C) कुशल
 - (D) कोनो नहि
८. विदेह-सदेह २५ मे डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार के लेलनि?
 - (A) नबोनारायण मिश्र
 - (B) गजेन्द्र ठाकुर
 - (C) मुन्नाजी
 - (D) कोनो नहि

९. डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक साक्षात्कारक शीर्षक की?

- (A) मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी
- (B) कोनो नहि
- (C) भाग रौ
- (D) सहस्रबाढ़नि

१०. 'वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक' प्रकाशित कहिया कएल गेल छल जे अपेक्षित सहयोग नहि भेटलाक कारणे नहि भऽ सकल?

- (A) २०१६
- (B) २०१०
- (C) २०२०
- (D) कोनो नहि

खण्ड ५८ : विदेह-सदेह २५ — सझिया रोपनि (विस्तार) आ वीरेन्द्र मल्लिक साक्षात्कार

११. 'सझिया रोपनि' क पुरुष बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम के छथि?

- (A) घनश्याम घनेरो
- (B) मुन्नाजी
- (C) नारायणजी
- (D) कोनो नहि

१२. 'सझिया रोपनि' क महिला बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम के छथि?

- (A) मुन्नी कामत
- (B) आभा झा
- (C) प्रियंवदा
- (D) कोनो नहि

१३. गजेन्द्र ठाकुर अनुसार घनश्याम घनेरोक 'अछोप' कथाक भाषिक विशेषता की?

- (A) सोंगर (ठेठ) मैथिलीक संग कटाह (कटु) भाव
- (B) केवल मधुर भाषा
- (C) विदेशी भाषाक मिश्रण
- (D) कोनो नहि

१४. मुन्नाजीक 'फोकस!' कथाक भाव कोना वर्णित अछि?

- (A) खट-मिठाह
- (B) केवल मधुर
- (C) केवल कटु
- (D) कोनो नहि

१५. डा. वीरेन्द्र मल्लिक साक्षात्कार के लेलनि?

- (A) नबोनारायण मिश्र
- (B) गजेन्द्र ठाकुर
- (C) डॉ. प्रमोद कुमार
- (D) कोनो नहि

१६. 'वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक' क प्रस्तावित प्रकाशन कहिया घोषित भेल छल, मुदा नहि भऽ सकल?

- (A) २०१६
- (B) २०१०
- (C) २०२०
- (D) कोनो नहि

१७. एहि विशेषांक हेतु विदेह द्वारा कुल कतेक प्रश्न तैयार कएल गेल छल?

- (A) १६ टा
- (B) दस टा
- (C) पाँच टा
- (D) कोनो नहि

१८. साक्षात्कारक प्रश्न-सूचीमे कोन संस्थागत विषयपर प्रश्न सम्मिलित छल?

- (A) चेतना समितिमे दलित वर्गक प्रवेशक स्थिति
- (B) केवल पारिवारिक विषय
- (C) केवल आर्थिक विषय
- (D) कोनो नहि

१९. साक्षात्कारक प्रश्न-सूचीमे मैथिली साहित्यक भौगोलिक केन्द्रसँ सम्बद्ध कोन प्रश्न छल?

- (A) दरभंगा पीठक संग सहरसा पीठक उदयक विषयमे मत
- (B) केवल पुरस्कार
- (C) केवल पाठक-संख्या
- (D) कोनो नहि

२०. साक्षात्कारक शीर्षक की रहल?

- (A) मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी
- (B) मैथिली मरि रहल अछि
- (C) कोनो नहि
- (D) साहित्यक भविष्य अन्धकारमय

खण्ड ५९ : विदेह-सदेह २५ — ढोल-पिपही कलाकार आ पलायन-संकट (विस्तार)

२१. 'ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?' शीर्षक आलेख केकर लिखल अछि?

- (A) किशन कारीगर
- (B) गजेन्द्र ठाकुर
- (C) मुन्नाजी
- (D) कोनो नहि

२२. 'पिपही' वाद्य आन कोन नामसँ जानल जाइत अछि?

- (A) शहनाई
- (B) ढोल
- (C) डुगडुगी
- (D) कोनो नहि

२३. परम्परागत रूपेँ ढोल-पिपही कोन-कोन अवसरपर बजाओल जाइत छल?

- (A) दुर्गा पूजा, मूरन-उपनेन, बियाह-तिलक
- (B) केवल शोक-अवसर
- (C) केवल युद्ध
- (D) कोनो नहि

२४. लेखकक पैतृक गाम कोन नामसँ जानल जाइत अछि?

- (A) मंगरौना
- (B) रंगपुर
- (C) लोहना
- (D) कोनो नहि

२५. लेखक अपन गामक कोन-कोन प्रसिद्ध ढोल-पिपही कलाकारक नाम लैत छथि?

- (A) जुगेसर राम, देबन राम, सीताराम राम, बनैया, भोला राम
- (B) केवल एक नाम
- (C) विदेशी कलाकार
- (D) कोनो नहि

२६. आलेख अनुसार ढोल-पिपही कलाकारक विलुप्तिक एक प्रमुख कारण की?

- (A) डी.जे. नाचक बढ़ैत प्रचलन आ नव पीढ़ीक अरुचि
- (B) अधिक लोकप्रियता
- (C) सरकारी समर्थन
- (D) कोनो नहि

२७. किशन कारीगरक एक आन आलेख 'भैंट' (एक लोक-मनोरंजन शैली) क उल्लेख कोन गामसँ जुड़ल अछि?

- (A) भरौड़ा (गोनू झाक गाम)
- (B) मंगरौना
- (C) रंगपुर
- (D) कोनो नहि

२८. 'भैंट' शैलीक उद्देश्य की छल, आलेख अनुसार?

- (A) समाजक स्वरूपकेँ फकड़ा-शैलीमे चिनहारि कऽ मनोरंजन करब
- (B) केवल धन-कमाएब
- (C) युद्ध-वर्णन
- (D) कोनो नहि

२९. किशन कारीगरक मिथिलाक पलायन-सम्बन्धी आलेखक मूल चिन्ता की?

- (A) मिथिलामे रोजगारक अभाव आ परदेश-कमाएबाक बाध्यता
- (B) विदेशी निवेश
- (C) कृषि-समृद्धि
- (D) कोनो नहि

३०. आलेख अनुसार मिथिलामे रोजगारक विकल्पक रूपमे की सुझाओल गेल अछि?

- (A) फैक्ट्री, स्टार्ट-अप, लघु उद्योग
- (B) केवल सरकारी नोकरी
- (C) केवल कृषि
- (D) कोनो नहि

खण्ड 3408 : विदेह-सदेह 25 — गजेन्द्र ठाकूर: 'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा

३१. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेह सम्पादक

३५. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेह सम्पादक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099मे गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3409 : विदेह-सदेह 25 — नबोनारायण मिश्रक: डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'

४१. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

४५. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100मे नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरेँ हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3410 : विदेह-सदेह 25 — डा. योगानन्द झा: 'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'

५१. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी मैथिलक अनुभूति

५५. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी मैथिलक अनुभूति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101मे डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “प्रवासी मैथिलक अनुभूति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3411 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'

६१. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक कलाकारक संरक्षण

६५. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक कलाकारक संरक्षण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’” प्रविष्टि गद्य, आलेख/निबन्ध आ “लोक कलाकारक संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3412 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'

७१. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति

७५. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103मे डा. किशन कारीगरक “‘पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/आलेख आ “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3413 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'

८१. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा

८५. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
८८. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
८९. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
९०. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- खण्ड 3414 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'**
९१. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
- (A) 'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
९२. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) गद्य
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
९३. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) व्यंग्य
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आधुनिकताक प्रभाव

१५. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आधुनिकताक प्रभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105मे डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “आधुनिकताक प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3415 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'

१०१. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण

१०५. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?’”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?’” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3416 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मोछ वाली मौगी'

१११. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मोछ वाली मौगी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण

११५. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107मे डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3417 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'

१२१. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक चोरीक मुद्दा

१२५. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक चोरीक मुद्दा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3418 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'

१३१. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली सिनेमाक स्थिति

१३५. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली सिनेमाक स्थिति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “'मैथिली सिनेमाक स्थिति'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3419 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'

१४१. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता

१४५. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3420 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'

१५१. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा/व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बीहिन कथा विधामे योगदान

१५५. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बीहिन कथा विधामे योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण

सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”कँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111मे डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा/व्यंग्य आ “'बीहनि कथा विधामे योगदान’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3421 : विदेह-सदेह 25 — संतोष कुमार राय 'बटोही': 'बकरी संस्कृधत' (गद्य)

१६१. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बकरी संस्कृधत' (गद्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-संस्कृतिपर आधारित

१६५. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-संस्कृतिपर आधारित
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक-संस्कृतिपर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3422 : विदेह-सदेह 25 — मधर्कात ठाकुर: 'धचंता मामा'

१७१. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'धचंता मामा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा/संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक संस्मरण

१७५. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक संस्मरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मधर्कात ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कात ठाकुरक “'धचंता मामा'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथा/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधकांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113मे मधकांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि गद्य, कथा/संस्मरण आ “पारिवारिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3423 : विदेह-सदेह 25 — िधिकांत कर्ण: 'बीहधन कथा-बड़का भक्त'

१८१. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहधन कथा-बड़का भक्त'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति

१८५. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक िधिकांत कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114मे िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3424 : विदेह-सदेह 25 — सुभरा धमश्र 'भाव्या': 'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'

१९१. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली लघु कथा विधा

१९५. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली लघु कथा विधा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभरा धमश्र 'भाव्या', विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'"कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115मे सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)’” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “मैथिली लघु कथा विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3425 : विदेह-सदेह 25 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: 'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'

२०१. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा-चिन्तन

२०५. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा-चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक िहधर, केकर मौसा धछयौ?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक िहधर, केकर मौसा धछयौ?’”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक िहधर, केकर मौसा धछयौ?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “'िज्ञ, भाषाक िहधर, केकर मौसा धछयौ?’” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “भाषा-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3426 : विदेह-सदेह 25 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: 'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'

२११. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली शिक्षाक दुर्दशा

२१५. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली शिक्षाक दुर्दशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “'मैथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3427 : विदेह-सदेह 25 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: 'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'।

२२१. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यात्रा साहित्य

२२५. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यात्रा साहित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” के विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंरि-या'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “यात्रा साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3428 : विदेह-सदेह 25 — दीधपका िक: 'अपरिी तय अधछ'

२३१. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरिी तय अधछ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अपरिी तय अधछ'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरिी तय अधछ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरिी तय अधछ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरिी तय अधछ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी स्वर

२३५. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरीती तय अधछ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी स्वर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरीती तय अधछ'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दीधपका ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरीती तय अधछ'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरीती तय अधछ'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िक “'अपरीती तय अधछ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119मे दीधपका िक “'अपरीती तय अधछ'” प्रविष्टि गद्य, कथा/आलेख आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3429 : विदेह-सदेह 25 — राजनहदन लाल दास: रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)

२४१. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

२४५. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनन्दन लाल दास विशेषांक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजनहदन लाल दास, विधा —, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”कें विदेह-सदेह 25क — भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे —संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120मे राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि —, — आ “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3430 : विदेह-सदेह 25 — मुकि दर्तः 'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'

२५१. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचनात्मक निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२५५. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुक्ति दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुक्ति दर्त्त, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुक्ति दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुक्ति दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुक्ति दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121मे मुक्ति दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3431 : विदेह-सदेह 25 — दिलीप कुमार झा: 'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'

२६१. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा शिक्षा पर बल

२६५. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा शिक्षा पर बल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दिलीप कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122मे दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “भाषा शिक्षा पर बल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3432 : विदेह-सदेह 25 — अजित कुमार झा: 'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'

२७१. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति

२७५. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अजित कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरण/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123मे अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/आलेख आ “दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3433 : विदेह-सदेह 25 — अशोक: 'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'

२८१. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान

२८५. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124मे अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3434 : विदेह-सदेह 25 — जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल': 'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'

२९१. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व

२९५. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'" केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरण/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'" प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/समीक्षा आ "राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3435 : विदेह-सदेह 25 — चन्दना दत्त: 'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'

३०१. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक "'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक "'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन

३०५. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चन्दना दत्त, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०९. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126मे चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3436 : विदेह-सदेह 25 — अमोद झा: 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'

३११. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाट्य-समीक्षा

३१५. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाट्य-समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमोद झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'"

रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'" केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१९. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127मे अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाट्य-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3437 : विदेह-सदेह 25 — अखिलेश झा: 'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'

३२१. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचनात्मक निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य साधनाक मूल्यांकन

३२५. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य साधनाक मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अखिलेश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२९. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128मे अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3438 : विदेह-सदेह 25 — कामेश्वर झा 'कमल': 'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'

३३१. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पत्रिकाक इतिहास

३३५. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पत्रिकाक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामेश्वर झा 'कमल', विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पि्रुका आ स-पादक ०ी राजनउदन लाल दास'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पिंका आ स-पादक ०ी राजनन्दन लाल दास'”क विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३९. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पिंका आ स-पादक ०ी राजनन्दन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129मे कामेश्वर झा 'कमल'क “'कणाभ्रामृत पिंका आ स-पादक ०ी राजनन्दन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “पत्रिकाक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3439 : विदेह-सदेह 25 — प्रदीप बिहारी: 'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'

३४१. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) निजी जीवनक झाँकी

३४५. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) निजी जीवनक झाँकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४९. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130मे प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “निजी जीवनक झाँकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3440 : विदेह-सदेह 25 — अरिबन्ध ठाकूर: "'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'

३५१. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिबन्ध ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) "'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिल आदिमतावाद

३५५. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिल आदिमतावाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अरिवन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५९. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा' सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131मे अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा' सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/ आलोचना आ “मैथिल आदिमतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3441 : विदेह-सदेह 25 — विजय इस्सर "वत्स": 'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'

३६१. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक विभूतिक स्मृति

३६५. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्वराजनन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक विभूतिक स्मृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजय इस्सर "वत्स", विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132मे विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3442 : विदेह-सदेह 25 — शिव शंकर श्रीनिवास: 'राजनन्दन लालदासक नाटक'

३७१. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'राजनन्दन लालदासक नाटक'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक-समीक्षा

३७५. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक-समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव शंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133मे शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3443 : विदेह-सदेह 25 — शैलेन्द्र मिश्र: 'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'

३८१. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा

३८५. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शैलेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८९. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134मे शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3444 : विदेह-सदेह 25 — मुन्ना जी: 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'

३९१. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यमे जातिवाद विरोध

३९५. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यमे जातिवाद विरोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९९. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135मे मुन्ना जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समीक्षा आ “साहित्यमे जातिवाद विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3445 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हारक: 'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'

४०१. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जातिवादी सीमाक विरोध

४०५. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जातिवादी सीमाक विरोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०९. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136मे आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “जातिवादी सीमाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3446 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'

४११. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा

४१५. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१९. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137मे आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3447 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'

४२१. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना/व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल विधाक मानकीकरण

४२५. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल विधाक मानकीकरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचना/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२९. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138मे आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/व्यंग्य आ “गजल विधाक मानकीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3448 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हारक: 'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'

४३१. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) वैचारिक निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य आ समाजक सिद्धान्त

४३५. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य आ समाजक सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ वैचारिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३९. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139मे आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक निबन्ध आ “साहित्य आ समाजक सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3449 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'साहित्य केंद्रित जोगीरा'

४४१. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'साहित्य केंद्रित जोगीरा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-साहित्यक विवेचना

४४५. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-साहित्यक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४९. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140मे आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “लोक-साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3450 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'

४५१. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन

४५५. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५९. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141मे आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3451 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'

४६१. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) विवेचनात्मक आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६४. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस

४६५. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विवेचनात्मक आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'"कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ विवेचनात्मक आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६९. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142मे आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'" प्रविष्टि गद्य, विवेचनात्मक आलोचना आ “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3452 : विदेह-सदेह 25 — श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूर: रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)

४७१. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७४. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर

४७५. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूर, विधा —, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” के विदेह-सदेह 25क — भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे —संसारसँ जुड़ल अछि।

४७९. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143मे श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि —, — आ “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3453 : विदेह-सदेह 25 — प्रदीप पुष्प: 'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'

४८१. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचनात्मक निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन

४८५. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८९. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144मे प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3454 : विदेह-सदेह 25 — नारायणजी: 'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'

४९१. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान

४९५. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नारायणजी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९९. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145मे नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3455 : विदेह-सदेह 25 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: 'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'

५०१. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०४. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध

५०५. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०९. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3456 : विदेह-सदेह 25 — प्रदीप पुष्प: २ टा रुबाइ आ २ टा गजल

५११. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २ टा रुबाइ आ २ टा गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रुबाइ/गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१४. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल परम्परा

५१५. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१९. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147मे प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3457 : विदेह-सदेह 25 — धदनकर कुमार: ३० टा कधर्वता

५२१. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ३० टा कधर्वता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२४. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता-संग्रह

५२५. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता-संग्रह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धदनकर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२९. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148मे धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कविता-संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3458 : विदेह-सदेह 25 — कुमुद "अनुहजया": 'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'

५३१. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३४. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक कटाक्ष

५३५. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुखा धसम्मड़ कर्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक कटाक्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुख्खा धसम्मइ कर्त्तै जोगलो जाय'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमुद "अनुहजया", विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुख्खा धसम्मइ कर्त्तै जोगलो जाय'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुख्खा धसम्मइ कर्त्तै जोगलो जाय'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३९. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुख्खा धसम्मइ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149मे कुमुद "अनुहजया"क “'सुख्खा धसम्मइ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3459 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: भधक्त गजल, धकछु गजल

५४१. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भधक्त गजल, धकछु गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४४. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन

५४५. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४९. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150मे आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3460 : विदेह-सदेह 25 — राज धकिोर धमश्रक: 'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'

५५१. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५४. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक चेतना

५५५. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राज धकिोर धमश्रक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'”क विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५९. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151मे राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3461 : विदेह-सदेह 25 — संतोष कुमार राय 'बटोही': 'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'

५६१. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६४. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक सम्बन्ध

५६५. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'”क विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६९. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतसँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यक व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3462 : विदेह-सदेह 25 — संतोष कुमार राय 'बटोही': 'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'

५७१. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७४. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

५७५. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनाव, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’”कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७९. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3463 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'

५८१. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८४. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोकगीत शैली

५८५. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोकगीत शैली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” रचना/लेखककारा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८८. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८९. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९०. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154मे डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3464 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'

५९१. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९४. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानव जीवनक प्रश्न

५९५. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानव जीवनक प्रश्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९८. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’”कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९९. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155मे डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानव जीवनक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3465 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’

६०१. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०४. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

६०५. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०८. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०९. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१०. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156मे डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3466 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'

६११. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१४. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य

६१५. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१८. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'"केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१९. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२०. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157मे डा. किशन कारीगरक “'बधन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टि पद्य, कविता/बाल कविता आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3467 : विदेह-सदेह 25 — कल्पना झा: 'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'

६२१. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२४. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी स्वर

६२५. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी स्वर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कल्पना झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२८. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२९. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३०. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158मे कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3468 : विदेह-सदेह 25 — मुत्रा जी: 'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'

६३१. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/ताँका
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३४. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ताँका विधामे मैथिली प्रयोग

६३५. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ताँका विधामे मैथिली प्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुत्रा जी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/ताँका
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३८. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'"कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/ताँकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३९. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४०. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159मे मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" प्रविष्टि पद्य, कविता/ताँका आ “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3469 : विदेह-सदेह 25 — आशीष नीरज: 'राजनंदन लाल दास' (कविता)

६४१. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'राजनंदन लाल दास' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/श्रद्धांजलि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४४. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनन्दन लाल दासकें श्रद्धांजलि

६४५. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनन्दन लाल दासकें श्रद्धांजलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष नीरज, विधा पद्य, उप-विधा कविता/श्रद्धांजलि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४८. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” के विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४९. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५०. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160मे आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/श्रद्धांजलि आ “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3470 : विदेह-सदेह 25 — सारस्वत: 'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'

६५१. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५४. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) होली पर्व पर आधारित

६५५. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) होली पर्व पर आधारित
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सारस्वत, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५८. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'”कें विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५९. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६०. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161मे सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर ”]'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “होली पर्व पर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) डा. प्रमोद कुमार — ‘सझिया रोपनि’ (सझिया-साझ बीहनि कथा संग्रह) क सम्पादक डा. प्रमोद कुमार छथि।

२. (A) ४३ टा — ‘सझिया रोपनि’ मे ४३ टा बीहनि कथा-लेखकक रचना सम्मिलित अछि।

३. (A) ८६ टा — ४३ गोट लेखकक ८६ टा बीहनि कथाक सझिया-साझ रोपनि एहि संग्रहमे भेल अछि।

४. (A) आह्लादकारी — गजेन्द्र ठाकुर लिखित छथि जे महिला बीहनि कथा लेखकक संख्या आह्लादकारी अछि, आ तइ लेल सम्पादकक अपक्ष दृष्टिकोण प्रशंसनीय अछि।
५. (A) कठोर रूपसँ १०० शब्द — डॉ. प्रमोद कुमार अनुसार बीहनि कथाक नपना कठोर रूपसँ १०० शब्द छी, जे २ मिनटमे पढ़ल जा सकैत अछि।
६. (A) अछोप — घनश्याम घनेरोक बीहनि कथाक नाम ‘अछोप’ थिक।
७. (A) फोकस! — मुन्नाजीक बीहनि कथाक नाम ‘फोकस!’ थिक।
८. (A) नबोनारायण मिश्र — डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार नबोनारायण मिश्र द्वारा लेल गेल।
९. (A) मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी — साक्षात्कारक शीर्षक ‘मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी’ थिक।
१०. (A) २०१६ — विदेह सन् २०१६ मे ‘वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक’ प्रकाशित करबाक घोषणा केने रहए, मुदा अपेक्षित सहयोग नहि भेटबाक कारणे ई प्रकाशित नहि भऽ सकल।
११. (A) घनश्याम घनेरो — ‘सझिया रोपनि’ क पुरुष बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम घनश्याम घनेरो छथि।
१२. (A) मुन्नी कामत — ‘सझिया रोपनि’ क महिला बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम मुन्नी कामत छथि।
१३. (A) सोंगर (ठेठ) मैथिलीक संग कटाह (कटु) भाव — गजेन्द्र ठाकुर अनुसार ‘अछोप’ सोंगर मैथिलीकेँ ठाढ़ रखबाक सम्पादकीय प्रयास दिस लक्षित अछि, मुदा भावमे कटाह (कटु) अछि।
१४. (A) खट-मिठाह — गजेन्द्र ठाकुर अनुसार मुन्नाजीक ‘फोकस!’ खट-मिठाह (मिश्रित स्वाद बला) भाव रखैत अछि।
१५. (A) नबोनारायण मिश्र — डा. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार नबोनारायण मिश्र द्वारा लेल गेल।
१६. (A) २०१६ — सन् २०१६ मे विदेह ‘वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक’ प्रकाशित करबाक घोषणा केने रहए, मुदा अपेक्षित सहयोग नहि भेटबाक कारणे ई प्रकाशित नहि भऽ सकल।
१७. (A) १६ टा — एहि विशेषांक हेतु विदेह द्वारा कुल १६ टा प्रश्न तैयार कएल गेल छल।
१८. (A) चेतना समितिमे दलित वर्गक प्रवेशक स्थिति — प्रश्न-सूचीमे एकटा प्रश्न ‘चेतना समितिमे एखनो दलित वर्गक प्रवेश निषेध छै, एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिए?’ क रूपमे सम्मिलित छल — ई एक सीधा साक्षात्कार-प्रश्न थिक, कोनो एकपक्षीय आरोप नहि।
१९. (A) दरभंगा पीठक संग सहरसा पीठक उदयक विषयमे मत — एकटा प्रश्न छल — ‘दरभंगे पीठ जकाँ आब सहरसा पीठ बनि रहल छै, ई मैथिलीक लेल नीक की खराप?’ — जे मैथिली साहित्यक भौगोलिक केन्द्रक विकेन्द्रीकरणपर विचार माँगैत छल।
२०. (A) मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी — साक्षात्कारक शीर्षक ‘मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी’ थिक, जे डॉ. मल्लिकक समकालीन मैथिली साहित्यक प्रति आशावादी दृष्टिकोण देखबैत अछि।
२१. (A) किशन कारीगर — ‘ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’ आलेख किशन कारीगर लिखलनि, जे मिथिलाक विलुप्त होइत लोक-कला परम्परापर हुनकर निरन्तर श्रृंखलाक एक अंग थिक।
२२. (A) शहनाई — आलेख अनुसार ‘पिपही’ केँ शहनाई सेहो कहल जाइत अछि, जे मांगलिक धून बजाबैत अछि।
२३. (A) दुर्गा पूजा, मूरन-उपनेन, बियाह-तिलक — ढोल-पिपही दुर्गा पूजा, मूरन-उपनेन आ बियाह-तिलक सन मांगलिक अवसरपर बजाओल जाइत छल।
२४. (A) मंगरौना — लेखकक पैतृक गाम मंगरौना थिक।
२५. (A) जुगेसर राम, देबन राम, सीताराम राम, बनैया, भोला राम — लेखक अपन पैतृक गाम मंगरौनाक प्रसिद्ध ढोल-पिपही कलाकार जुगेसर राम, देबन राम, सीताराम राम, बनैया आ भोला रामक नाम लैत छथि।
२६. (A) डी.जे. नाचक बढैत प्रचलन आ नव पीढ़ीक अरुचि — आलेख अनुसार डी.जे. नाचक बढैत प्रचलन आ नव पीढ़ीमे ई कला सीखबाक अरुचिक कारणे ढोल-पिपही कलाकार विलुप्त भऽ रहल छथि।
२७. (A) भरौड़ा (गोनू झाक गाम) — लेखक अनुसार ‘भैंट’ (फकड़ा-शैलीक लोक-मनोरंजन) क परम्परा भरौड़ा गाम (गोनू झाक गाम) सँ हुनकर गाम मंगरौना धरि अबैत छल।
२८. (A) समाजक स्वरूपकेँ फकड़ा-शैलीमे चिनहारि कऽ मनोरंजन करब — ‘भैंट’ शैलीक उद्देश्य समाजक विभिन्न स्वरूप आ चरित्रकेँ फकड़ा-शैलीमे चिनहारि कऽ लोकक मनोरंजन करब छल, जाहिसँ कलाकार अपन आजीविका चलाबैत छलाह।

३९. (A) मिथिलामे रोजगारक अभाव आ परदेश-कमाएबाक बाध्यता — आलेखक मूल चिन्ता मिथिलामे रोजगारक अभाव अछि, जे लोककें परदेश (बाहर) कमाएब लेल बाध्य करैत अछि।
४०. (A) फैक्ट्री, स्टार्ट-अप, लघु उद्योग — आलेखमे सुझाओल गेल अछि जे मिथिलामे फैक्ट्री, स्टार्ट-अप आ लघु उद्योग सन रोजगारक नव विकल्पपर विचार करबाक आवश्यकता अछि, यद्यपि लेखक एहन प्रयासक सामाजिक उपहास सेहो उल्लेख करैत छथि।
४१. (A) 'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2099मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” रूपमे देल अछि।
४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४४. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।
४५. (A) विदेह सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।
४६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०. (B) खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099मे गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१. (A) डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिहें हम निराश नहि छी' — सूचकांक पंक्ति 2100मे नबोनारायण मिश्रक प्रविष्टि “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिहें हम निराश नहि छी'” रूपमे देल अछि।
४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
४४. (D) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” अछि।
४५. (A) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।
४६. (B) लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०. (B) खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100मे नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिहें हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१. (A) 'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि' — सूचकांक पंक्ति 2101मे डा. योगानन्द झाक प्रविष्टि “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” रूपमे देल अछि।
५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
५४. (D) प्रवासी मैथिलक अनुभूति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मैथिलक अनुभूति” अछि।
५५. (A) प्रवासी मैथिलक अनुभूति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मैथिलक अनुभूति” रूपमे देखाइत अछि।

५६. (B) लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०. (B) खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101मे डा. योगानन्द झाक “‘प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि’” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “प्रवासी मैथिलक अनुभूति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१. (A) ‘मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’ — सूचकांक पंक्ति 2102मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “‘मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’” रूपमे देल अछि।
६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३. (C) आलेख/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/निबन्ध” अछि।
६४. (D) लोक कलाकारक संरक्षण — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक कलाकारक संरक्षण” अछि।
६५. (A) लोक कलाकारक संरक्षण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक कलाकारक संरक्षण” रूपमे देखाइत अछि।
६६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८. (D) ई पाठ आलेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०. (B) खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102मे डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमहकर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’” प्रविष्टि गद्य, आलेख/निबन्ध आ “लोक कलाकारक संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१. (A) ‘पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’ — सूचकांक पंक्ति 2103मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “‘पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” रूपमे देल अछि।
७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३. (C) व्यंग्य/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/आलेख” अछि।
७४. (D) साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” अछि।
७५. (A) साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।
७६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८. (D) ई पाठ व्यंग्य/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०. (B) खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103मे डा. किशन कारीगरक “‘पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?’” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/आलेख आ “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१. (A) ‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हड़/अछि?’ — सूचकांक पंक्ति 2104मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हड़/अछि?’” रूपमे देल अछि।

८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
८४. (D) पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” अछि।
८५. (A) पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” रूपमे देखाइत अछि।
८६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०. (B) खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104मे डा. किशन कारीगरक “‘मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदशा लैए दोखी के सब हइ/अछि?’” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९१. (A) 'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन' — सूचकांक पंक्ति 2105मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “‘बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन’” रूपमे देल अछि।
९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९३. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
९४. (D) आधुनिकताक प्रभाव — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकताक प्रभाव” अछि।
९५. (A) आधुनिकताक प्रभाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिकताक प्रभाव” रूपमे देखाइत अछि।
९६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९८. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१००. (B) खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105मे डा. किशन कारीगरक “‘बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन’” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “आधुनिकताक प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०१. (A) 'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?' — सूचकांक पंक्ति 2106मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “‘मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?’” रूपमे देल अछि।
१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१०४. (D) मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण” अछि।
१०५. (A) मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
१०६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०. (B) खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?’” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११. (A) 'मोछ वाली मौगी' — सूचकांक पंक्ति 2107मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मोछ वाली मौगी'” रूपमे देल अछि।

११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११३. (C) व्यंग्य/कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/कथा” अछि।

११४. (D) लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” अछि।

११५. (A) लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

११६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११८. (D) ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२०. (B) खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107मे डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२१. (A) 'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान' — सूचकांक पंक्ति 2108मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” रूपमे देल अछि।

१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

१२४. (D) साहित्यिक चोरीक मुद्दा — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” अछि।

१२५. (A) साहित्यिक चोरीक मुद्दा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।

१२६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३०. (B) खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३१. (A) 'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग' — सूचकांक पंक्ति 2109मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” रूपमे देल अछि।

१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

१३४. (D) मैथिली सिनेमाक स्थिति — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली सिनेमाक स्थिति” अछि।

१३५. (A) मैथिली सिनेमाक स्थिति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली सिनेमाक स्थिति” रूपमे देखाइत अछि।

१३६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली सिनेमाक स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) 'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी' — सूचकांक पंक्ति 2110मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” रूपमे देल अछि।
१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
१४४. (D) मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” अछि।
१४५. (A) मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” रूपमे देखाइत अछि।
१४६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०. (B) खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१. (A) 'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष' — सूचकांक पंक्ति 2111मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” रूपमे देल अछि।
१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३. (C) बीहनि कथा/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा/व्यंग्य” अछि।
१५४. (D) बीहनि कथा विधामे योगदान — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहनि कथा विधामे योगदान” अछि।
१५५. (A) बीहनि कथा विधामे योगदान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहनि कथा विधामे योगदान” रूपमे देखाइत अछि।
१५६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५८. (D) ई पाठ बीहनि कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६०. (B) खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111मे डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा/व्यंग्य आ “बीहनि कथा विधामे योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६१. (A) 'बकरी संस्कृधत' (गद्य) — सूचकांक पंक्ति 2112मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” रूपमे देल अछि।
१६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६४. (D) लोक-संस्कृतिपर आधारित — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-संस्कृतिपर आधारित” अछि।

१६५. (A) लोक-संस्कृतिपर आधारित — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-संस्कृतिपर आधारित” रूपमे देखाइत अछि।
१६६. (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७०. (B) खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृत' (गद्य)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक-संस्कृतिपर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७१. (A) 'धचंता मामा' — सूचकांक पंक्ति 2113मे मधकांत ठाकुरक प्रविष्टि “'धचंता मामा'” रूपमे देल अछि।
१७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७३. (C) कथा/संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/संस्मरण” अछि।
१७४. (D) पारिवारिक संस्मरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक संस्मरण” अछि।
१७५. (A) पारिवारिक संस्मरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक संस्मरण” रूपमे देखाइत अछि।
१७६. (B) लेखक मधकांत ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८. (D) ई पाठ कथा/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113मे मधकांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि गद्य, कथा/संस्मरण आ “पारिवारिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) 'बीहधन कथा-बड़का भक्त' — सूचकांक पंक्ति 2114मे िधिकांत कर्णक प्रविष्टि “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१८४. (D) बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति” अछि।
१८५. (A) बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक िधिकांत कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114मे िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) 'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)' — सूचकांक पंक्ति 2115मे सुभरा धमश्र 'भाव्या'क प्रविष्टि “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९३. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

१९४. (D) मैथिली लघु कथा विधा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लघु कथा विधा” अछि।
१९५. (A) मैथिली लघु कथा विधा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लघु कथा विधा” रूपमे देखाइत अछि।
१९६. (B) लेखक सुभरा धमश्र ‘भाव्या’, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९८. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२००. (B) खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115मे सुभरा धमश्र ‘भाव्या’क “‘बीहनि कथा (हकार, प्रपंच)’” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “मैथिली लघु कथा विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०१. (A) ‘िज्ञ, भाषाक ाहधर, केकर मौसा धछयौ?’ — सूचकांक पंक्ति 2116मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “‘िज्ञ, भाषाक ाहधर, केकर मौसा धछयौ?’” रूपमे देल अछि।
२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०३. (C) व्यंग्य/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/निबन्ध” अछि।
२०४. (D) भाषा-चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-चिन्तन” अछि।
२०५. (A) भाषा-चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
२०६. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०८. (D) ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१०. (B) खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘िज्ञ, भाषाक ाहधर, केकर मौसा धछयौ?’” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “भाषा-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२११. (A) ‘मैथिलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ’ — सूचकांक पंक्ति 2117मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “‘मैथिलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ’” रूपमे देल अछि।
२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१३. (C) व्यंग्य/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/निबन्ध” अछि।
२१४. (D) मैथिली शिक्षाक दुर्दशा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” अछि।
२१५. (A) मैथिली शिक्षाक दुर्दशा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” रूपमे देखाइत अछि।
२१६. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१८. (D) ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२०. (B) खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘मैथिलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ’” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२१. (A) 'अधभनर्व दीधच, जालंर-या' — सूचकांक पंक्ति 2118मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “'अधभनर्व दीधच, जालंर-या'” रूपमे देल अछि।
२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२३. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
२२४. (D) यात्रा साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा साहित्य” अछि।
२२५. (A) यात्रा साहित्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।
२२६. (B) लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२८. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३०. (B) खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंर-या'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “यात्रा साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३१. (A) 'अपरी तय अधछ' — सूचकांक पंक्ति 2119मे दीधपका िक प्रविष्टि “'अपरी तय अधछ'” रूपमे देल अछि।
२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३३. (C) कथा/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/आलेख” अछि।
२३४. (D) नारी स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।
२३५. (A) नारी स्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।
२३६. (B) लेखक दीधपका ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३८. (D) ई पाठ कथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४०. (B) खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119मे दीधपका िक “'अपरी तय अधछ'” प्रविष्टि गद्य, कथा/आलेख आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४१. (A) रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक) — सूचकांक पंक्ति 2120मे राजनहदन लाल दासक प्रविष्टि “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” रूपमे देल अछि।
२४२. (B) — — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “—” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४३. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
२४४. (D) राजनन्दन लाल दास विशेषांक — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” अछि।
२४५. (A) राजनन्दन लाल दास विशेषांक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” रूपमे देखाइत अछि।
२४६. (B) लेखक राजनहदन लाल दास, विधा —, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४८. (D) ई पाठ —क रूपमे —संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५०. (B) खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120मे राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि —, — आ “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ

प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५१. (A) 'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास' — सूचकांक पंक्ति 2121मे मुकि दर्तक प्रविष्टि “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” रूपमे देल अछि।

२५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५३. (C) आलोचनात्मक निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचनात्मक निबन्ध” अछि।

२५४. (D) राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व” अछि।

२५५. (A) राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व” रूपमे देखाइत अछि।

२५६. (B) लेखक मुकि दर्त, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५८. (D) ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६०. (B) खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121मे मुकि दर्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्रवः राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६१. (A) 'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा' — सूचकांक पंक्ति 2122मे दिलीप कुमार झाक प्रविष्टि “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” रूपमे देल अछि।

२६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

२६४. (D) भाषा शिक्षा पर बल — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा शिक्षा पर बल” अछि।

२६५. (A) भाषा शिक्षा पर बल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा शिक्षा पर बल” रूपमे देखाइत अछि।

२६६. (B) लेखक दिलीप कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७०. (B) खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122मे दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “भाषा शिक्षा पर बल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७१. (A) 'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी' — सूचकांक पंक्ति 2123मे अजित कुमार झाक प्रविष्टि “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” रूपमे देल अछि।

२७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७३. (C) संस्मरण/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/आलेख” अछि।

२७४. (D) दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति” अछि।

२७५. (A) दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

२७६. (B) लेखक अजित कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७८. (D) ई पाठ संस्मरण/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८०. (B) खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123मे अजित कुमार झाक “'वन मैन आमा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/आलेख आ “दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८१. (A) 'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत' — सूचकांक पंक्ति 2124मे अशोकक प्रविष्टि “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” रूपमे देल अछि।
२८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
२८४. (D) 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान — टिप्पणीक पहिल संकेत “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” अछि।
२८५. (A) 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” रूपमे देखाइत अछि।
२८६. (B) लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९०. (B) खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124मे अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९१. (A) 'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')' — सूचकांक पंक्ति 2125मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'” रूपमे देल अछि।
२९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९३. (C) संस्मरण/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/समीक्षा” अछि।
२९४. (D) राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” अछि।
२९५. (A) राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।
२९६. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९८. (D) ई पाठ संस्मरण/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३००. (B) खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक')'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/समीक्षा आ “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०१. (A) 'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव' — सूचकांक पंक्ति 2126मे चन्दना दत्तक प्रविष्टि “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” रूपमे देल अछि।
३०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
३०४. (D) नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” अछि।
३०५. (A) नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
३०६. (B) लेखक चन्दना दत्त, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१०. (B) खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126मे चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३११. (A) 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)' — सूचकांक पंक्ति 2127मे अमोद झाक प्रविष्टि “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” रूपमे देल अछि।
३१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३१४. (D) नाट्य-समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य-समीक्षा” अछि।
३१५. (A) नाट्य-समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३१६. (B) लेखक अमोद झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२०. (B) खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127मे अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो' (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाट्य-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२१. (A) 'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनन्दन लाल दास' — सूचकांक पंक्ति 2128मे अखिलेश झाक प्रविष्टि “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनन्दन लाल दास'” रूपमे देल अछि।
३२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२३. (C) आलोचनात्मक निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचनात्मक निबन्ध” अछि।
३२४. (D) साहित्य साधनाक मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” अछि।
३२५. (A) साहित्य साधनाक मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
३२६. (B) लेखक अखिलेश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२८. (D) ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३०. (B) खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128मे अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनन्दन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३१. (A) 'कणाभ्रामृत पिङ्गा आ सपादक ओी राजनन्दन लाल दास' — सूचकांक पंक्ति 2129मे कामेश्वर झा ‘कमल’क प्रविष्टि “'कणाभ्रामृत पिङ्गा आ सपादक ओी राजनन्दन लाल दास'” रूपमे देल अछि।
३३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
३३४. (D) पत्रिकाक इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रिकाक इतिहास” अछि।
३३५. (A) पत्रिकाक इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रिकाक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
३३६. (B) लेखक कामेश्वर झा ‘कमल’, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४०. (B) खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129मे कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणाभ्रामृत पिङ्गा आ सपादक ओी राजनन्दन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “पत्रिकाक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४१. (A) 'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री' — सूचकांक पंक्ति 2130मे प्रदीप बिहारीक प्रविष्टि “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” रूपमे देल अछि।
३४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
३४४. (D) निजी जीवनक झाँकी — टिप्पणीक पहिल संकेत “निजी जीवनक झाँकी” अछि।
३४५. (A) निजी जीवनक झाँकी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निजी जीवनक झाँकी” रूपमे देखाइत अछि।
३४६. (B) लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५०. (B) खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130मे प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “निजी जीवनक झाँकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५१. (A) "'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म' — सूचकांक पंक्ति 2131मे अरिवन्द ठाकूरक प्रविष्टि “'चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” रूपमे देल अछि।
३५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५३. (C) शोध-निबन्ध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध/आलोचना” अछि।
३५४. (D) मैथिल आदिमतावाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल आदिमतावाद” अछि।
३५५. (A) मैथिल आदिमतावाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल आदिमतावाद” रूपमे देखाइत अछि।

३५६. (B) लेखक अरिवन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५८. (D) ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६०. (B) खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131मे अरिवन्द ठाकूरक “'चित्रा-विचित्रा' सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिल आदिमतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६१. (A) 'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी' — सूचकांक पंक्ति 2132मे विजय इस्सर "वत्स"क प्रविष्टि “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'” रूपमे देल अछि।
३६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
३६४. (D) साहित्यिक विभूतिक स्मृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” अछि।
३६५. (A) साहित्यिक विभूतिक स्मृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।
३६६. (B) लेखक विजय इस्सर "वत्स", विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७०. (B) खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132मे विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७१. (A) 'राजनन्दन लालदासक नाटक' — सूचकांक पंक्ति 2133मे शिव शंकर श्रीनिवासक प्रविष्टि “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” रूपमे देल अछि।
३७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३७४. (D) नाटक-समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक-समीक्षा” अछि।
३७५. (A) नाटक-समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३७६. (B) लेखक शिव शंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८०. (B) खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133मे शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८१. (A) 'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा' — सूचकांक पंक्ति 2134मे शैलेन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” रूपमे देल अछि।
३८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

३८४. (D) साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा” अछि।
३८५. (A) साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा” रूपमे देखाइत अछि।
३८६. (B) लेखक शैलेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९०. (B) खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134मे शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९१. (A) 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान' — सूचकांक पंक्ति 2135मे मुत्रा जीक प्रविष्टि “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” रूपमे देल अछि।
३९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९३. (C) आलेख/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/समीक्षा” अछि।
३९४. (D) साहित्यमे जातिवाद विरोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यमे जातिवाद विरोध” अछि।
३९५. (A) साहित्यमे जातिवाद विरोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यमे जातिवाद विरोध” रूपमे देखाइत अछि।
३९६. (B) लेखक मुत्रा जी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९८. (D) ई पाठ आलेख/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४००. (B) खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135मे मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समीक्षा आ “साहित्यमे जातिवाद विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०१. (A) 'जातिवादी राजनन्दन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक' — सूचकांक पंक्ति 2136मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'जातिवादी राजनन्दन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” रूपमे देल अछि।
४०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
४०४. (D) जातिवादी सीमाक विरोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवादी सीमाक विरोध” अछि।
४०५. (A) जातिवादी सीमाक विरोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवादी सीमाक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।
४०६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१०. (B) खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136मे आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनन्दन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “जातिवादी सीमाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४११. (A) 'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)' — सूचकांक पंक्ति 2137मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" रूपमे देल अछि।
४१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
४१४. (D) मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” अछि।
४१५. (A) मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४१६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२०. (B) खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137मे आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'" प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२१. (A) 'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज' — सूचकांक पंक्ति 2138मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” रूपमे देल अछि।
४२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२३. (C) आलोचना/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/व्यंग्य” अछि।
४२४. (D) गजल विधाक मानकीकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल विधाक मानकीकरण” अछि।
४२५. (A) गजल विधाक मानकीकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल विधाक मानकीकरण” रूपमे देखाइत अछि।
४२६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२८. (D) ई पाठ आलोचना/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३०. (B) खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138मे आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/व्यंग्य आ “गजल विधाक मानकीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३१. (A) 'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता' — सूचकांक पंक्ति 2139मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” रूपमे देल अछि।
४३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३३. (C) वैचारिक निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैचारिक निबन्ध” अछि।
४३४. (D) साहित्य आ समाजक सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य आ समाजक सिद्धान्त” अछि।
४३५. (A) साहित्य आ समाजक सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य आ समाजक सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।
४३६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३८. (D) ई पाठ वैचारिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४०. (B) खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139मे आशीष अनिचन्हारक “'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक निबन्ध आ “साहित्य आ समाजक सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४१. (A) 'साहित्य केंद्रित जोगीरा' — सूचकांक पंक्ति 2140मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” रूपमे देल अछि।
४४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
४४४. (D) लोक-साहित्यक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-साहित्यक विवेचना” अछि।
४४५. (A) लोक-साहित्यक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-साहित्यक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
४४६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५०. (B) खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140मे आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “लोक-साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५१. (A) 'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना' — सूचकांक पंक्ति 2141मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” रूपमे देल अछि।
४५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४५४. (D) वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” अछि।
४५५. (A) वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
४५६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६०. (B) खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141मे आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६१. (A) 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"' — सूचकांक पंक्ति 2142मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” रूपमे देल अछि।
४६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६३. (C) विवेचनात्मक आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विवेचनात्मक आलोचना” अछि।
४६४. (D) गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” अछि।
४६५. (A) गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” रूपमे देखाइत अछि।

४६६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विवेचनात्मक आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६८. (D) ई पाठ विवेचनात्मक आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७०. (B) खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142मे आशीष अनिचन्हारक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक “कथित गजल”” प्रविष्टि गद्य, विवेचनात्मक आलोचना आ “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७१. (A) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक (परिचय एवं रचना) — सूचकांक पंक्ति 2143मे श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुरक प्रविष्टि “रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” रूपमे देल अछि।
४७२. (B) — — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “—” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७३. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
४७४. (D) आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” अछि।
४७५. (A) आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” रूपमे देखाइत अछि।
४७६. (B) लेखक श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर, विधा —, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७८. (D) ई पाठ —क रूपमे —संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८०. (B) खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143मे श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुरक “रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि —, — आ “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८१. (A) 'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकुर' — सूचकांक पंक्ति 2144मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकुर'” रूपमे देल अछि।
४८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८३. (C) आलोचनात्मक निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचनात्मक निबन्ध” अछि।
४८४. (D) रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” अछि।
४८५. (A) रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
४८६. (B) लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८८. (D) ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९०. (B) खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144मे प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकुर'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९१. (A) 'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक' — सूचकांक पंक्ति 2145मे नारायणजीक प्रविष्टि “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” रूपमे देल अछि।
४९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
४९४. (D) रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान — टिप्पणीक पहिल संकेत “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” अछि।
४९५. (A) रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” रूपमे देखाइत अछि।
४९६. (B) लेखक नारायणजी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५००. (B) खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145मे नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५०१. (A) 'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता' — सूचकांक पंक्ति 2146मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” रूपमे देल अछि।
५०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
५०४. (D) साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” अछि।
५०५. (A) साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
५०६. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१०. (B) खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५११. (A) २ टा रुबाइ आ २ टा गजल — सूचकांक पंक्ति 2147मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” रूपमे देल अछि।
५१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१३. (C) रुबाइ/गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ/गजल” अछि।
५१४. (D) गजल परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।
५१५. (A) गजल परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
५१६. (B) लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१८. (D) ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५२०. (B) खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147मे प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२१. (A) ३० टा कधर्वता — सूचकांक पंक्ति 2148मे धनकर कुमारक प्रविष्टि “३० टा कधर्वता” रूपमे देल अछि।
५२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५२४. (D) कविता-संग्रह — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता-संग्रह” अछि।
५२५. (A) कविता-संग्रह — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता-संग्रह” रूपमे देखाइत अछि।
५२६. (B) लेखक धनकर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३०. (B) खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148मे धनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कविता-संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३१. (A) 'सुक्खा धसम्मड़ कर्ते जोगलो जाय' — सूचकांक पंक्ति 2149मे कुमुद "अनुहजया"क प्रविष्टि “'सुक्खा धसम्मड़ कर्ते जोगलो जाय'” रूपमे देल अछि।
५३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५३४. (D) सामाजिक कटाक्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक कटाक्ष” अछि।
५३५. (A) सामाजिक कटाक्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक कटाक्ष” रूपमे देखाइत अछि।
५३६. (B) लेखक कुमुद "अनुहजया", विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४०. (B) खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149मे कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्ते जोगलो जाय'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४१. (A) भधक्त गजल, धकछु गजल — सूचकांक पंक्ति 2150मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “भधक्त गजल, धकछु गजल” रूपमे देल अछि।
५४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
५४४. (D) वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” अछि।
५४५. (A) वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।
५४६. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५०. (B) खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150मे आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५१. (A) 'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ' — सूचकांक पंक्ति 2151मे राज धकिोर धमश्रक प्रविष्टि “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” रूपमे देल अछि।

५५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५५४. (D) सामाजिक चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

५५५. (A) सामाजिक चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

५५६. (B) लेखक राज धकिोर धमश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५६०. (B) खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151मे राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६१. (A) 'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी' — सूचकांक पंक्ति 2152मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'” रूपमे देल अछि।

५६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५६४. (D) पारिवारिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

५६५. (A) पारिवारिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

५६६. (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५७०. (B) खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरवाली, माए, धपता, भैयारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५७१. (A) 'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?' — सूचकांक पंक्ति 2153मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” रूपमे देल अछि।

५७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५७४. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

५७५. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

५७६. (B) लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८०. (B) खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'आलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८१. (A) 'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो' — सूचकांक पंक्ति 2154मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो’” रूपमे देल अछि।
५८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५८४. (D) लोकगीत शैली — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत शैली” अछि।
५८५. (A) लोकगीत शैली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत शैली” रूपमे देखाइत अछि।
५८६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९०. (B) खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154मे डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९१. (A) 'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?' — सूचकांक पंक्ति 2155मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” रूपमे देल अछि।
५९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५९४. (D) मानव जीवनक प्रश्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानव जीवनक प्रश्न” अछि।
५९५. (A) मानव जीवनक प्रश्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानव जीवनक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।
५९६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६००. (B) खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155मे डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानव जीवनक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०१. (A) 'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’ — सूचकांक पंक्ति 2156मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” रूपमे देल अछि।
६०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६०४. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

६०५. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

६०६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६१०. (B) खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156मे डा. किशन कारीगरक “‘धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६११. (A) ‘बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)’ — सूचकांक पंक्ति 2157मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “‘बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)’” रूपमे देल अछि।

६१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६१३. (C) कविता/बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/बाल कविता” अछि।

६१४. (D) बाल साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

६१५. (A) बाल साहित्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

६१६. (B) लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६१८. (D) ई पाठ कविता/बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६२०. (B) खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157मे डा. किशन कारीगरक “‘बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)’” प्रविष्टि पद्य, कविता/बाल कविता आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६२१. (A) ‘पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी’ — सूचकांक पंक्ति 2158मे कल्पना झाक प्रविष्टि “‘पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी’” रूपमे देल अछि।

६२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६२४. (D) नारी स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

६२५. (A) नारी स्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

६२६. (B) लेखक कल्पना झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६३०. (B) खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158मे कल्पना झाक “‘पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी’” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६३१. (A) 'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)' — सूचकांक पंक्ति 2159मे मुत्रा जीक प्रविष्टि “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" रूपमे देल अछि।
६३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३३. (C) कविता/ताँका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/ताँका” अछि।
६३४. (D) ताँका विधामे मैथिली प्रयोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” अछि।
६३५. (A) ताँका विधामे मैथिली प्रयोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।
६३६. (B) लेखक मुत्रा जी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/ताँका — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६३८. (D) ई पाठ कविता/ताँकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४०. (B) खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159मे मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'" प्रविष्टि पद्य, कविता/ताँका आ “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४१. (A) 'राजनन्दन लाल दास' (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2160मे आशीष नीरजक प्रविष्टि “'राजनन्दन लाल दास' (कविता)” रूपमे देल अछि।
६४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४३. (C) कविता/श्रद्धांजलि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/श्रद्धांजलि” अछि।
६४४. (D) राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” अछि।
६४५. (A) राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” रूपमे देखाइत अछि।
६४६. (B) लेखक आशीष नीरज, विधा पद्य, उप-विधा कविता/श्रद्धांजलि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४८. (D) ई पाठ कविता/श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५०. (B) खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160मे आशीष नीरजक “'राजनन्दन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/श्रद्धांजलि आ “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५१. (A) 'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा)]; ३. “निमोछिया अबीर ”]' — सूचकांक पंक्ति 2161मे सारस्वतक प्रविष्टि “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा)]; ३. “निमोछिया अबीर ”]'" रूपमे देल अछि।
६५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६५४. (D) होली पर्व पर आधारित — टिप्पणीक पहिल संकेत “होली पर्व पर आधारित” अछि।
६५५. (A) होली पर्व पर आधारित — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली पर्व पर आधारित” रूपमे देखाइत अछि।
६५६. (B) लेखक सारस्वत, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६६०. (B) खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161मे सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “होली पर्व पर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ३ : विदेह-सदेह २६ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड १७ : विदेह-सदेह २६ — मैथिली साहित्यक काल-विभाजन

१. विदेह-सदेह २६ मे काल-निर्धारणक आलेख के लिखलनि?

- (A) डॉ. शम्भु कुमार सिंह
- (B) गजेन्द्र ठाकुर
- (C) विभा रानी
- (D) कोनो नहि

२. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म कहिया भेल?

- (A) १८ अप्रैल १९६५
- (B) १ जनवरी १९७१
- (C) १५ मार्च १९५५
- (D) कोनो नहि

३. एहि आलेखक उद्देश्य कोन परीक्षार्थी लेल उपयोगी कहल गेल?

- (A) यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी
- (B) केवल विद्यालय छात्र
- (C) विदेशी छात्र
- (D) कोनो नहि

४. मैथिली साहित्यक काल-विभाजन कतेक युगमे कएल गेल अछि?

- (A) तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य)
- (B) दू
- (C) पाँच
- (D) दस

५. गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक के मानल गेल?

- (A) महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव)
- (B) ज्योतिरीश्वर
- (C) गजेन्द्र ठाकुर
- (D) कोनो नहि

६. मध्य युगकेँ कोन नामसँ चिन्हित कएल गेल?

- (A) नाटक युग
- (B) गद्य युग
- (C) गीतिकाव्य युग
- (D) कोनो नहि

७. वर्तमान युगकेँ कोन नामसँ चिन्हित कएल गेल?

- (A) गद्य युग
- (B) नाटक युग
- (C) गीतिकाव्य युग
- (D) कोनो नहि

८. काल-विभाजनक मूल चुनौती की मानल गेल?

- (A) तिथि-निर्धारणमे विद्वानक मतैक्यक अभाव
- (B) कोनो चुनौती नहि
- (C) सरल कार्य
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६० : विदेह-सदेह २६ — मैथिली साहित्यक काल-विभाजन (शम्भु कुमार सिंह)

९. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म कहिया भेल?

- (A) १८ अप्रैल १९६५
- (B) १ जनवरी १९७०
- (C) १५ अगस्त १९६०
- (D) कोनो नहि

१०. एहि आलेखक उपशीर्षक अनुसार ई कोन परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी कहल गेल?

- (A) यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी
- (B) केवल विद्यालय छात्र
- (C) विदेशी छात्र
- (D) कोनो नहि

११. शम्भु कुमार सिंह अनुसार मैथिली साहित्यक काल-विभाजन कतेक युगमे कएल गेल अछि?

- (A) तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य)
- (B) दू
- (C) पाँच
- (D) कोनो नहि

१२. गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक के मानल गेलाह?

- (A) महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव)
- (B) ज्योतिरीश्वर
- (C) चंदा झा
- (D) कोनो नहि

१३. मध्य युगकें कोन नामसँ चिन्हित कएल गेल, आ किएक?

- (A) नाटक युग, नाट्य-रचना दिस प्रवृत्ति झुकलाक कारणे
- (B) गद्य युग
- (C) गीतिकाव्य युग
- (D) कोनो नहि

१४. मम्म. डॉ. उमेश मिश्र कोन सालमे 'मैथिली भाषा ओ साहित्य' विषयपर भाषण देलनि?

- (A) मार्च १९५३
- (B) १९६० मे
- (C) १९४० मे
- (D) कोनो नहि

१५. डॉ. उमेश मिश्र अनुसार आदियुगक कालखण्ड की छल?

- (A) १०००-१६०० ई.
- (B) १३००-१८०० ई.
- (C) ८००-१२०० ई.
- (D) कोनो नहि

१६. डॉ. जयकान्त मिश्रक शोध-प्रबन्धक अंग्रेजी नाम की?

- (A) The History of Maithili Literature
- (B) Maithili Drama History
- (C) Tirhuta Script History
- (D) कोनो नहि

१७. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार 'प्राक् मैथिली काल' क कालखण्ड की छल?

- (A) आठम शताब्दीसँ बारहम शताब्दी धरि
- (B) दसम शताब्दीसँ
- (C) चौदहम शताब्दीसँ
- (D) कोनो नहि

१८. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार 'प्रारंभिक मैथिली साहित्य' काल कहिया धरि छल?

- (A) १३०० ई.सँ १६०० ई.
- (B) १००० ई.सँ १३०० ई.
- (C) १६००सँ १८००
- (D) कोनो नहि

१९. आलेखक केन्द्रीय प्रश्न की?

- (A) काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वानमे मतैक्य किएक नहि अछि
- (B) केवल ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत करब
- (C) कोनो प्रश्न नहि
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६१ : विदेह-सदेह २६ — काल-विभाजनक प्रतिस्पर्धी सिद्धान्त (विस्तार)

२०. नव जागरण-कालक अन्तर्गत 'जनचेतना युग' कहिया प्रारम्भ मानल गेल?

- (A) १९८६ ई.सँ
- (B) १९४७ ई.सँ
- (C) १९३६ ई.सँ
- (D) कोनो नहि

२१. प्रो. धीरेन्द्र 'मैथिली प्रकाश' कोन सालमे काल-विभाजनपर अपन मत प्रस्तुत केलनि?

- (A) नवम्बर १९८६
- (B) १९६० मे
- (C) १९७० मे
- (D) कोनो नहि

२२. प्रो. धीरेन्द्र अनुसार 'ज्योतिरीश्वर युग' क कालखण्ड की छल?

- (A) १३२४ सँ १४१२ ई.
- (B) ८०० सँ १३२४ ई.
- (C) १४१२ सँ १५२७ ई.
- (D) कोनो नहि

२३. समालोचक प्रो. झा प्रो. धीरेन्द्रक कोन प्रस्तावसँ असहमत छथि?

- (A) ज्योतिरीश्वर नामसँ एक पृथक युगक कल्पना
- (B) विद्यापति युगक नाम
- (C) उत्तर विद्यापति युगक नाम
- (D) कोनो नहि

२४. प्रो. प्रेमशंकर सिंह 'वैदेही' कोन सालक पत्रिकामे काल-विभाजनपर निबन्ध लिखलनि?

- (A) १९६३ ई. (जनवरी-मार्च अंक)
- (B) १९५० ई.
- (C) १९७० ई.
- (D) कोनो नहि

२५. प्रो. प्रेमशंकर सिंह 'वैदेही' अनुसार 'अपभ्रंश काल' कहिया धरि छल?

- (A) १००० ई.सँ पूर्व
- (B) १३२४ ई. धरि
- (C) १८५७ ई. धरि
- (D) कोनो नहि

२६. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार 'कोर्ट ऑफ वर्ड्स' क घटना कोन सालक आधुनिक काल-प्रारम्भक तर्कसँ जुड़ल अछि?

- (A) १८६० ई.
- (B) १९४७ ई.
- (C) १३२४ ई.
- (D) कोनो नहि

२७. आलेख अनुसार १८५७ सँ आधुनिक युगक प्रारम्भ मानबाक की प्रमुख कारण देल गेल?

- (A) १८५७क क्रान्ति आ व्यक्तिक स्वतन्त्रता-चेतनाक उभार
- (B) केवल भाषा-परिवर्तन
- (C) केवल साहित्यिक कारण
- (D) कोनो नहि

२८. मैथिली साहित्यक आदिकालपर अलग आलेखक उपशीर्षक की?

- (A) यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी
- (B) केवल विद्यालय छात्र हेतु
- (C) विदेशी छात्र हेतु
- (D) कोनो नहि

२९. आलेख अनुसार मिथिला प्राचीन काल कोन विद्याक केन्द्र रहल?

- (A) संस्कृत
- (B) अंग्रेजी
- (C) फारसी
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६९ : विदेह-सदेह २६ — आदिकालीन मैथिली लोक-साहित्यिक विधा (विस्तार)

३०. मैथिली साहित्यक आदिकालीन सामग्रीमे कोन-कोन लोक-विधाक महत्त्वपूर्ण स्थान मानल गेल अछि?

- (A) डाक-वचन, लोरिक, मरसीया
- (B) केवल पद्य
- (C) केवल नाटक
- (D) कोनो नहि

३१. 'लोरिक' गायन-शैलीक विशेषता की कहल गेल अछि?

- (A) गायक भावाविष्ट भऽ झूमि उठैत छथि
- (B) केवल शांत स्वर
- (C) विदेशी शैली
- (D) कोनो नहि

३२. 'मरसीया' गीतक विषय-वस्तु की होइत अछि?

- (A) शोक/विलाप-सम्बन्धी भाव
- (B) हास्य-भाव
- (C) वीर-गाथा
- (D) कोनो नहि

३३. आलेखक निष्कर्ष अनुसार मैथिली भाषामे गीत आ कथाक सृजन कहिया धरि आरम्भ भऽ गेल छल?

- (A) तेरहम-चौदहम शताब्दी धरि
- (B) दसम शताब्दी धरि
- (C) सोलहम शताब्दी धरि
- (D) कोनो नहि

३४. आलेख अनुसार लोकगीत-लोकगाथाक एक विशेषता की कहल गेल अछि?

- (A) नायक कोनो विशेष जाति-वर्गसँ सीमित नहि
- (B) केवल राजवंशीय नायक
- (C) केवल विदेशी नायक
- (D) कोनो नहि

खण्ड ७८ : विदेह-सदेह २६ — मैथिली आदिकालक स्रोत-सामग्री (शब्द, वाक्यखण्ड, डाकवचन)

३५. मैथिलीक प्रारंभिक कालक अध्ययन हेतु उपलब्ध सामग्री कतेक भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) चारि भाग (शब्द, वाक्यखंड, सूक्ति, लोकगीत-लोकगाथा)
- (B) दू भाग
- (C) दस भाग
- (D) कोनो नहि

३६. मैथिली शब्दक प्रयोग करबाक प्रथम (नवम् शताब्दीक) लेखक के मानल जाइत छथि, आलेख अनुसार?

- (A) वाचस्पति मिश्र
- (B) सर्वानन्द
- (C) ज्योतिरीश्वर
- (D) कोनो नहि

३७. वाचस्पति मिश्रक प्रसिद्ध ग्रंथ 'भामति' कोन ग्रंथक टीका थिक?

- (A) शाङ्कर भाष्य
- (B) वर्णरत्नाकर
- (C) कीर्तिलता
- (D) कोनो नहि

३८. डॉ. सुभद्र झाक निबन्ध अनुसार सर्वानन्दक 'अमरकोष' मे कतेक मैथिली शब्द प्रयुक्त भेल अछि?

- (A) ४०० सँ ६०० बीच
- (B) १० सँ २०
- (C) हजारसँ बेसी
- (D) कोनो नहि

३९. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार मैथिलीक तृतीय सामग्री (शब्द हेतु) कतय भेटैत अछि?

- (A) पञ्जीमे
- (B) वर्णरत्नाकरमे
- (C) कीर्तिलतामे
- (D) कोनो नहि

४०. म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ नेपालमे १९१६ ई.मे कतेक ग्रंथ भेटल, जे 'बौद्धगान ओ दोहा' नामसँ प्रकाशित भेल?

- (A) तीन गोटा (दोहाकोष, चर्याचर्य विनिश्चय, डाकार्णव)
- (B) एक गोटा
- (C) दस गोटा
- (D) कोनो नहि

४१. डाकवचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान कोन ग्रंथसँ सेहो प्राचीन मानैत छथि?

- (A) चर्यापद
- (B) वर्णरत्नाकर
- (C) कीर्तिलता
- (D) कोनो नहि

४२. मिथिलाक किवदंती अनुसार डाक (डाक वचनावलीक रचनाकार) के छथि?

- (A) बराहमिहिरक पुत्र, जातिक गोआर
- (B) ज्योतिरीश्वरक पुत्र
- (C) विद्यापतिक पुत्र
- (D) कोनो नहि

४३. वर्णरत्नाकरकेँ मैथिलीक की मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) प्राचीनतम गद्य ग्रंथ
- (B) प्राचीनतम पद्य ग्रंथ
- (C) प्राचीनतम नाटक
- (D) कोनो नहि

४४. 'लोरिक विजय' पर श्री मणिपद्मक एकटा निबन्ध कोन पत्रिकामे कहिया प्रकाशित भेल छल?

- (A) 'वैदेही' मे, दिसम्बर १९५३
- (B) 'विदेह' मे, २०१०
- (C) 'मिथिला मिहिर' मे, १९६०
- (D) कोनो नहि

खण्ड 3471 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

४५. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”

पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन

४९. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”

प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु

उपयोगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”

रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु

उपयोगी)”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”

प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3472 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिली साहित्यक आदिकाल'

५५. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिली साहित्यक आदिकाल'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना

५९. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3473 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'

६५. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना

६९. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “'मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3474 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

७५. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण

७९. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”

प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3475 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

८५. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”

प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम

८९. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९३. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3476 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'

९५. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संकलन/पाठ्य सामग्री
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य

१९. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा संकलन/पाठ्य सामग्री
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संकलन/पाठ्य सामग्रीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि गद्य, संकलन/पाठ्य सामग्री आ “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3477 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'

१०५. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना

१०९. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘घसल अठन्नी: एकटा विमर्श’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘घसल अठन्नी: एकटा विमर्श’”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११३. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘घसल अठन्नी: एकटा विमर्श’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘घसल अठन्नी: एकटा विमर्श’” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “‘मधुप’ जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3478 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'

११५. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्ताज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनुवाद कार्यशालाक समाचार

११९. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनुवाद कार्यशालाक समाचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२३. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न’” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3479 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'

१२५. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''' प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'''क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'''क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''' पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य

१२९. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''' प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'''क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''' रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''”के विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३३. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)''” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/व्यंग्य आ “सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3480 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'

१३५. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)''” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)''”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)''”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)''” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बरगाछ आ मैथिलीक रूपक

१३९. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बरगाछ आ मैथिलीक रूपक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'"कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४३. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “बरगाछ आ मैथिलीक रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3481 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: जेठ'

१४५. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहनि कथा: जेठ'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दहेज प्रथाक विडम्बना

१४९. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दहेज प्रथाक विडम्बना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५३. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “दहेज प्रथाक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3482 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: पूस'

१५५. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहनि कथा: पूस'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण

१५९. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”कँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६३. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3483 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: सौदागर'

१६५. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहनि कथा: सौदागर'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) देह-व्यापारक भयावह विडम्बना

१६९. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) देह-व्यापारक भयावह विडम्बना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७३. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3484 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: गरमी'

१७५. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बीहनि कथा: गरमी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शोषित वर्गक शोषण

१७९. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शोषित वर्गक शोषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८३. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “शोषित वर्गक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3485 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'लघुकथा: अवसरक निर्माण'

१८५. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'लघुकथा: अवसरक निर्माण'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-संघर्ष

१८९. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-संघर्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९३. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जीवन-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3486 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'लघुकथा: दूभि'

१९५. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'लघुकथा: दूभि'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना

१९९. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०३. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3487 : विदेह-सदेह 26 — रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'

२०५. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनूदित लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोंकणीसँ मैथिली

२०९. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोंकणीसँ मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१३. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178मे रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3488 : विदेह-सदेह 26 — वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'

२१५. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनूदित लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोंकणीसँ मैथिली

२१९. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोंकणीसँ मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२३. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3489 : विदेह-सदेह 26 — सेबी फर्नांडीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: सौंगर'

२२५. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नांडीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अनूदित लघुकथा: सौंगर'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनूदित लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोंकणीसँ मैथिली

२२९. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोंकणीसँ मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३३. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180मे सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3490 : विदेह-सदेह 26 — वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'

२३५. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनूदित लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोंकणीसँ मैथिली

२३९. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोंकणीसँ मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४३. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3491 : विदेह-सदेह 26 — तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित उपन्यास: पाखलो'

२४५. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अनूदित उपन्यास: पाखलो'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनूदित उपन्यास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोंकणीसँ मैथिली

२४९. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोंकणीसँ मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित उपन्यास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनूदित उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५३. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182मे तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “‘अनूदित उपन्यास: पाखलो’” प्रविष्टि गद्य, अनूदित उपन्यास आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3492 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

२५५. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित चेतना

२५९. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६३. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3493 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

२६५. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित साहित्य

२६९. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित साहित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७३. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3494 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'

२७५. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार

२७९. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८३. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3495 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'

२८५. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक भाषाविज्ञान

२८९. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक भाषाविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९३. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3496 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'

२९५. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग

२९९. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०३. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रिपोर्टाज आ “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3497 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'कोशीमे बिताओल एक दिन'

३०५. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'कोशीमे बिताओल एक दिन'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोशी अंचलक यथार्थ

३०९. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोशी अंचलक यथार्थ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१३. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण आ “कोशी अंचलक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3498 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'

३१५. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि

३१९. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२३. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?’” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3499 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'

३२५. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

३२९. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका' ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका' ”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३३. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका' ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका' ” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3500 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'

३३५. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण' ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण' ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “ 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण' ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग

३३९. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४३. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3501 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)

३४५. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला

३४९. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५३. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3502 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'अतीत' (कविता)

३५५. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अतीत' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दार्शनिक

३५९. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दार्शनिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६३. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3503 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'आस' (कविता)

३६५. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'आस' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आशावादी

३६९. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आशावादी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)"कें विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७३. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'आस' (कविता)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3504 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'लोरी' (कविता)

३७५. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'लोरी' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/लोरी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित-शोषित जीवन

३७९. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित-शोषित जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोरी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”कँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/लोरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८३. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लोरी आ “दलित-शोषित जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3505 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'आह्वान' (कविता)

३८५. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'आह्वान' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) देशभक्ति

३८९. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) देशभक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९३. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3506 : विदेह-सदेह 26 — प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)

३९५. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) डोगरी-मैथिली

३९९. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) डोगरी-मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”कें विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०३. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197मे प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “डोगरी-मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3507 : विदेह-सदेह 26 — कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)

४०५. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल कविता

४०९. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)"केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१३. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198मे कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)" प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ "बाल कविता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3508 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)

४१५. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिलीक पहचानक प्रश्न

४१९. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिलीक पहचानक प्रश्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)”कें विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२३. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैथिलीक पहचानक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3509 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'सोधनपाल' (कविता)

४२५. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'सोधनपाल' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोविज्ञान

४२९. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३३. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लघुकथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3510 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)

४३५. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/पत्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित

४३९. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)”कें विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४३. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) डॉ. शम्भु कुमार सिंह — विदेह-सदेह २६ मे ‘मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण’ आलेख डॉ. शम्भु कुमार सिंह लिखलनि।
२. (A) १८ अप्रिल १९६५ — डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म १८ अप्रिल १९६५ केँ सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे भेल।
३. (A) यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी — आलेखक उपशीर्षकमे स्पष्ट कहल गेल जे ई यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी अछि।
४. (A) तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य) — आलेख अनुसार मैथिली साहित्यक काल-विभाजन तीन युगमे कएल गेल अछि — गीतिकाव्य युग, नाटक युग आ गद्य युग।
५. (A) महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव) — गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव) मानल गेलाह।
६. (A) नाटक युग — मध्य युगकेँ ‘नाटक युग’क संज्ञा देल गेल, किएक तँ ओहि कालमे गीति-संयोगसँ नाटकक रचना दिस लोकक प्रवृत्ति झुकल।
७. (A) गद्य युग — वर्तमान युगकेँ ‘गद्य युग’क संज्ञा देल गेल, किएक तँ एहि युगमे लेखक वृन्दक प्रवृत्ति गद्य लिखब दिस विशेष झुकल अछि।
८. (A) तिथि-निर्धारणमे विद्वानक मतैक्यक अभाव — आलेखमे प्रश्न उठाओल गेल जे काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य किएक नहि अछि, जे एकटा विचारणीय चुनौती मानल गेल।
९. (A) १८ अप्रिल १९६५ — डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म १८ अप्रिल १९६५ केँ सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे भेल।
१०. (A) यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी — आलेखक उपशीर्षकमे स्पष्ट कहल गेल जे ई यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी अछि।
११. (A) तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य) — शम्भु कुमार सिंह अनुसार मैथिली साहित्यक काल-विभाजन तीन युगमे कएल गेल अछि — गीतिकाव्य युग, नाटक युग आ गद्य युग।
१२. (A) महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव) — गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव) मानल गेलाह।
१३. (A) नाटक युग, नाट्य-रचना दिस प्रवृत्ति झुकलाक कारणे — मध्य युगकेँ ‘नाटक युग’क संज्ञा देल गेल, किएक तँ ओहि कालमे गीति-संयोगसँ नाटकक रचना दिस लोकक प्रवृत्ति झुकल।
१४. (A) मार्च १९५३ — मम्म. डॉ. उमेश मिश्र बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्क वार्षिक अधिवेशन, मार्च १९५३ मे अध्यक्ष पदसँ ‘मैथिली भाषा ओ साहित्य’ पर भाषण देलनि।
१५. (A) १०००-१६०० ई. — डॉ. उमेश मिश्र अनुसार आदियुगक कालखण्ड १०००-१६०० ई. धरि छल, जकरा ओ गीतियुग कहलनि।
१६. (A) The History of Maithili Literature — डॉ. जयकान्त मिश्रक शोध-प्रबन्ध ‘The History of Maithili Literature, Volume-I’ साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित भेल।
१७. (A) आठम शताब्दीसँ बारहम शताब्दी धरि — डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘प्राक् मैथिली काल’ आठम शताब्दीसँ बारहम शताब्दी धरि छल।
१८. (A) १३०० ई.सँ १६०० ई. — डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘प्रारंभिक मैथिली साहित्य’ काल १३०० ई.सँ १६०० ई. धरि छल।
१९. (A) काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वानमे मतैक्य किएक नहि अछि — आलेख प्रश्न उठाबैत अछि जे मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य किएक नहि अछि, जे विभिन्न विद्वानक भिन्न-भिन्न कालखण्ड-निर्धारणसँ स्पष्ट होइत अछि।
२०. (A) १९८६ ई.सँ — नव जागरण-कालक अन्तर्गत ‘जनचेतना युग’ १९८६ ई.सँ प्रारम्भ मानल गेल अछि।
२१. (A) नवम्बर १९८६ — प्रो. धीरेन्द्र ‘मैथिली प्रकाश’ नवम्बर १९८६ मे काल-विभाजनक प्रसंगमे अपन मत प्रस्तुत केलनि।
२२. (A) १३२४ सँ १४१२ ई. — प्रो. धीरेन्द्र अनुसार ‘ज्योतिरीश्वर युग’ १३२४ सँ १४१२ ई. धरि छल।

२३. (A) ज्योतिरीश्वर नामसँ एक पृथक युगक कल्पना — समालोचक प्रो. झा विद्यापति युग आ उत्तर विद्यापति युगक मतसँ सहमत छथि, परन्तु ज्योतिरीश्वर नामसँ एक पृथक युगक कल्पनाकेँ उचित नहि मानैत छथि।
२४. (A) १९६३ ई. (जनवरी-मार्च अंक) — प्रो. प्रेमशंकर सिंह 'वैदेही' १९६३ ई.क जनवरी-मार्च अंकमे 'मैथिली साहित्यक काल विभाजन' शीर्षक निबन्ध लिखलनि।
२५. (A) १००० ई.सँ पूर्व — प्रो. प्रेमशंकर सिंह 'वैदेही' अनुसार 'अपभ्रंश काल' १००० ई.सँ पूर्वक मानल गेल अछि।
२६. (A) १८६० ई. — डॉ. जयकान्त मिश्र तर्क दैत छथि जे १८६० मे मिथिलाक शासन 'कोर्ट ऑफ वर्डस्'क अधीन चलि गेल, जकर फलस्वरूप भाषा-साहित्य नव रूप धारण कऽ लेलक — एहि आधारपर ओ आधुनिक कालक प्रारम्भ १८६० सँ मानैत छथि।
२७. (A) १८५७क क्रान्ति आ व्यक्तिक स्वतन्त्रता-चेतनाक उभार — आलेख अनुसार १८५७क क्रान्ति आ ओहिसँ उत्पन्न व्यक्तिक स्वतन्त्रता-चेतनाक उभार आधुनिक युगक प्रारम्भ १८५७ सँ मानबाक प्रमुख कारण थिक।
२८. (A) यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी — 'मैथिली साहित्यक आदिकाल' आलेखक उपशीर्षक सेहो 'यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी' अछि।
२९. (A) संस्कृत — आलेख अनुसार मिथिला प्राचीन काल संस्कृतक केन्द्र रहल, जतय सम्पूर्ण भारत — विशेषतः पूर्वांचल — सँ छात्र संस्कृत-अध्ययनक हेतु अबैत छलाह।
३०. (A) डाक-वचन, लोरिक, मरसीया — आदिकालीन सामग्रीमे डाक-वचन (कृषि-मौसम सम्बन्धी लोकोक्ति), लोरिक (वीर-गाथा गीत) आ मरसीया (शोक-गीत) सन लोक-विधाक महत्वपूर्ण स्थान मानल गेल अछि।
३१. (A) गायक भावाविष्ट भऽ झूमि उठैत छथि — 'लोरिक' क गायन-शैलीक विशेषता ई कहल गेल अछि जे गायक गाबैत-गाबैत भावाविष्ट भऽ झूमि उठैत छथि आ तालसँ टाहि मारैत छथि — एक ओजस्वी ध्वनि-योजना।
३२. (A) शोक/विलाप-सम्बन्धी भाव — मरसीया गीत शोक वा विलाप-सम्बन्धी भावक अभिव्यक्ति करैत अछि, जे लोरिकक संरचना-शैलीसँ सेहो समानता रखैत अछि।
३३. (A) तेरहम-चौदहम शताब्दी धरि — आलेखक निष्कर्ष अनुसार दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैत अछि जे तेरहम-चौदहम शताब्दी धरि मैथिली भाषामे गीत तथा कथाक सृजन अवश्य होमए लागल छल।
३४. (A) नायक कोनो विशेष जाति-वर्गसँ सीमित नहि — आलेख अनुसार लोकगीत-लोकगाथाक एक विशेषता ई अछि जे एहिमे नायक कोनो विशेष जाति वा वर्गसँ सीमित नहि होइत छथि — ई समाजक व्यापक वर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि।
३५. (A) चारि भाग (शब्द, वाक्यखंड, सूक्ति, लोकगीत-लोकगाथा) — आलेख अनुसार मैथिलीक प्रारंभिक कालक सामग्री चारि भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि: शब्द, वाक्यखंड, सूक्ति तथा लोकगीत एवं लोकगाथा।
३६. (A) वाचस्पति मिश्र — आलेख अनुसार नवम् शताब्दीक लेखक वाचस्पति मिश्रक नाम सर्वप्रथम लेल जाइत अछि, जे अपन ग्रंथ 'भामति' मे मैथिली शब्द 'हरि' क प्रयोग कएने छथि।
३७. (A) शाङ्कर भाष्य — आलेख अनुसार 'भामति' शाङ्कर भाष्यक टीका थिक, जाहिमे वाचस्पति मिश्र मैथिली शब्द 'हरि'क प्रयोग कएने छथि।
३८. (A) ४०० सँ ६०० बीच — डॉ. सुभद्र झा अनुसार सर्वानन्दक 'अमरकोष' मे ४०० सँ ६०० बीच शुद्ध मैथिली शब्दक प्रयोग देखबामे अबैत अछि।
३९. (A) पञ्जीमे — डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार मैथिलीक तृतीय सामग्री पञ्जीमे भेटैत अछि, जकर प्रारंभ १३१० ई. मानल गेल अछि।
४०. (A) तीन गोट (दोहाकोष, चर्याचर्य विनिश्चय, डाकार्णव) — आलेख अनुसार म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ नेपालमे १९१६ ई.मे तीन गोट ग्रंथ भेटलनि— दोहाकोष, चर्याचर्य विनिश्चय आ डाकार्णव— जकरा ओ 'बौद्धगान ओ दोहा' नामसँ प्रकाशित करौलनि।
४१. (A) चर्यापद — आलेख अनुसार डाकवचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान चर्यापदहुँसँ प्राचीन मानैत छथि, कारण ओकर प्रचार सेहो उत्तर प्रदेश सहित समस्त पूर्वोत्तर भारतमे भेल।
४२. (A) बराहमिहिरक पुत्र, जातिक गोआर — आलेख अनुसार मिथिलामे प्रचलित किवदंती अनुसार डाक बराहमिहिरक पुत्र छलाह तथा जातिक गोआर छलाह।
४३. (A) प्राचीनतम गद्य ग्रंथ — आलेख अनुसार वर्णरत्नाकर मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रंथ थिक, जे १४म शताब्दीक आदिकाल (१३२४) क रचना थिक।
४४. (A) 'वैदेही' मे, दिसम्बर १९५३ — आलेख अनुसार 'लोरिक विजय' पर श्री मणिपद्मक निबन्ध दिसम्बर १९५३ मे 'वैदेही' पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल।
४५. (A) 'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी) — सूचकांक पंक्ति 2162मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रूपमे देल अछि।
४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४७. (C) शोध-निबन्ध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध/आलोचना” अछि।
४८. (D) मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” अछि।
४९. (A) मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” रूपमे देखाइत अछि।
५०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२. (D) ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४. (B) खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण’ (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५. (A) ‘मैथिली साहित्यक आदिकाल’ — सूचकांक पंक्ति 2163मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘मैथिली साहित्यक आदिकाल’” रूपमे देल अछि।
५६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
५८. (D) आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” अछि।
५९. (A) आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
६०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४. (B) खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘मैथिली साहित्यक आदिकाल’” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५. (A) ‘मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता’ — सूचकांक पंक्ति 2164मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता’” रूपमे देल अछि।
६६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
६८. (D) मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना” अछि।
६९. (A) मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
७०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७४. (B) खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता’” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “‘मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५. (A) 'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु) — सूचकांक पंक्ति 2165मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या’ (यू.पी.एस.सी. हेतु)” रूपमे देल अछि।
७६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
७८. (D) मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” अछि।
७९. (A) मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
८०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८४. (B) खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या’ (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “‘मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८५. (A) 'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु) — सूचकांक पंक्ति 2166मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या’ (यू.पी.एस.सी. हेतु)” रूपमे देल अछि।
८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
८८. (D) स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम” अछि।
८९. (A) स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम” रूपमे देखाइत अछि।
९०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९४. (B) खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या’ (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९५. (A) 'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन' — सूचकांक पंक्ति 2167मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन’” रूपमे देल अछि।
९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९७. (C) संकलन/पाठ्य सामग्री — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संकलन/पाठ्य सामग्री” अछि।
९८. (D) मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” अछि।
९९. (A) मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” रूपमे देखाइत अछि।

१००. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा संकलन/पाठ्य सामग्री — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०२. (D) ई पाठ संकलन/पाठ्य सामग्रीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०४. (B) खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि गद्य, संकलन/पाठ्य सामग्री आ “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०५. (A) 'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श' — सूचकांक पंक्ति 2168मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” रूपमे देल अछि।
१०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०७. (C) आलोचना/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/समीक्षा” अछि।
१०८. (D) 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना” अछि।
१०९. (A) 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
११०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११२. (D) ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११४. (B) खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११५. (A) 'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न' — सूचकांक पंक्ति 2169मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” रूपमे देल अछि।
११६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११७. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
११८. (D) अनुवाद कार्यशालाक समाचार — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” अछि।
११९. (A) अनुवाद कार्यशालाक समाचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” रूपमे देखाइत अछि।
१२०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२२. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२४. (B) खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२५. (A) 'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)' — सूचकांक पंक्ति 2170मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'” रूपमे देल अछि।
१२६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२७. (C) निबन्ध/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/व्यंग्य” अछि।
१२८. (D) सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य” अछि।
१२९. (A) सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१३०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३२. (D) ई पाठ निबन्ध/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३४. (B) खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘जाग’ जाग’ महादेव! (समसामयिक निर्बंध)’” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/व्यंग्य आ “सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३५. (A) ‘भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)’ — सूचकांक पंक्ति 2171मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)’” रूपमे देल अछि।
१३६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३७. (C) कथा/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/निबन्ध” अछि।
१३८. (D) बरगाछ आ मैथिलीक रूपक — टिप्पणीक पहिल संकेत “बरगाछ आ मैथिलीक रूपक” अछि।
१३९. (A) बरगाछ आ मैथिलीक रूपक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरगाछ आ मैथिलीक रूपक” रूपमे देखाइत अछि।
१४०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४२. (D) ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४४. (B) खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)’” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “बरगाछ आ मैथिलीक रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४५. (A) ‘बीहनि कथा: जेठ’ — सूचकांक पंक्ति 2172मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘बीहनि कथा: जेठ’” रूपमे देल अछि।
१४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४७. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१४८. (D) दहेज प्रथाक विडम्बना — टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथाक विडम्बना” अछि।
१४९. (A) दहेज प्रथाक विडम्बना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथाक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।
१५०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५२. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५४. (B) खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘बीहनि कथा: जेठ’” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “दहेज प्रथाक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५५. (A) ‘बीहनि कथा: पूस’ — सूचकांक पंक्ति 2173मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘बीहनि कथा: पूस’” रूपमे देल अछि।

१५६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५७. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१५८. (D) दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” अछि।
१५९. (A) दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
१६०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६२. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६४. (B) खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६५. (A) 'बीहनि कथा: सौदागर' — सूचकांक पंक्ति 2174मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'बीहनि कथा: सौदागर'” रूपमे देल अछि।
१६६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६७. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१६८. (D) देह-व्यापारक भयावह विडम्बना — टिप्पणीक पहिल संकेत “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” अछि।
१६९. (A) देह-व्यापारक भयावह विडम्बना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।
१७०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७२. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७४. (B) खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७५. (A) 'बीहनि कथा: गरमी' — सूचकांक पंक्ति 2175मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'बीहनि कथा: गरमी'” रूपमे देल अछि।
१७६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७७. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१७८. (D) शोषित वर्गक शोषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषित वर्गक शोषण” अछि।
१७९. (A) शोषित वर्गक शोषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषित वर्गक शोषण” रूपमे देखाइत अछि।
१८०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८२. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८४. (B) खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “शोषित वर्गक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८५. (A) 'लघुकथा: अवसरक निर्माण' — सूचकांक पंक्ति 2176मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” रूपमे देल अछि।
१८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८७. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१८८. (D) जीवन-संघर्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-संघर्ष” अछि।
१८९. (A) जीवन-संघर्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।
१९०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९२. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९४. (B) खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जीवन-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९५. (A) 'लघुकथा: दूभि' — सूचकांक पंक्ति 2177मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'लघुकथा: दूभि'” रूपमे देल अछि।
१९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९७. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१९८. (D) पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना — टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” अछि।
१९९. (A) पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।
२००. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०२. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०४. (B) खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०५. (A) 'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि' — सूचकांक पंक्ति 2178मे रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” रूपमे देल अछि।
२०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०७. (C) अनूदित लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित लघुकथा” अछि।
२०८. (D) कोंकणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।
२०९. (A) कोंकणीसँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणीसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
२१०. (B) लेखक रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१२. (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१४. (B) खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178मे रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१५. (A) 'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब' — सूचकांक पंक्ति 2179मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'” रूपमे देल अछि।
२१६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१७. (C) अनूदित लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित लघुकथा” अछि।
२१८. (D) कोंकणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।
२१९. (A) कोंकणीसँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणीसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
२२०. (B) लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२२. (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२४. (B) खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२५. (A) 'अनूदित लघुकथा: सौंगर' — सूचकांक पंक्ति 2180मे सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” रूपमे देल अछि।
२२६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२७. (C) अनूदित लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित लघुकथा” अछि।
२२८. (D) कोंकणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।
२२९. (A) कोंकणीसँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणीसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
२३०. (B) लेखक सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३२. (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३४. (B) खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180मे सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३५. (A) 'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी' — सूचकांक पंक्ति 2181मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” रूपमे देल अछि।
२३६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३७. (C) अनूदित लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित लघुकथा” अछि।
२३८. (D) कोंकणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।
२३९. (A) कोंकणीसँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणीसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

२४०. (B) लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४२. (D) ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४४. (B) खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४५. (A) 'अनूदित उपन्यास: पाखलो' — सूचकांक पंक्ति 2182मे तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” रूपमे देल अछि।
२४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४७. (C) अनूदित उपन्यास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित उपन्यास” अछि।
२४८. (D) कोंकणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।
२४९. (A) कोंकणीसँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणीसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
२५०. (B) लेखक तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित उपन्यास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५२. (D) ई पाठ अनूदित उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५४. (B) खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182मे तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित उपन्यास आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५५. (A) 'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी) — सूचकांक पंक्ति 2183मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रूपमे देल अछि।
२५६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
२५८. (D) दलित चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित चेतना” अछि।
२५९. (A) दलित चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
२६०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६४. (B) खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६५. (A) 'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी) — सूचकांक पंक्ति 2184मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रूपमे देल अछि।
२६६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
२६८. (D) दलित साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित साहित्य” अछि।
२६९. (A) दलित साहित्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।
२७०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७४. (B) खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७५. (A) 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा' — सूचकांक पंक्ति 2185मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” रूपमे देल अछि।
२७६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७७. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२७८. (D) मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” अछि।
२७९. (A) मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” रूपमे देखाइत अछि।
२८०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८२. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८४. (B) खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८५. (A) 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति' — सूचकांक पंक्ति 2186मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” रूपमे देल अछि।
२८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८७. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२८८. (D) सामाजिक भाषाविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक भाषाविज्ञान” अछि।
२८९. (A) सामाजिक भाषाविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक भाषाविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
२९०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९२. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९४. (B) खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति’” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९५. (A) 'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा' — सूचकांक पंक्ति 2187मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा’” रूपमे देल अछि।
२९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९७. (C) आलेख/रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/रिपोर्टाज” अछि।
२९८. (D) स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” अछि।
२९९. (A) स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” रूपमे देखाइत अछि।
३००. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०२. (D) ई पाठ आलेख/रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०४. (B) खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा’” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रिपोर्टाज आ “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०५. (A) 'कोशीमे बिताओल एक दिन' — सूचकांक पंक्ति 2188मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘कोशीमे बिताओल एक दिन’” रूपमे देल अछि।
३०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०७. (C) यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण” अछि।
३०८. (D) कोशी अंचलक यथार्थ — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोशी अंचलक यथार्थ” अछि।
३०९. (A) कोशी अंचलक यथार्थ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोशी अंचलक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।
३१०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१२. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३१३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१४. (B) खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘कोशीमे बिताओल एक दिन’” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण आ “कोशी अंचलक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१५. (A) 'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?' — सूचकांक पंक्ति 2189मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘उजड़ैत गाम: बसैत शहर?’” रूपमे देल अछि।
३१६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१७. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
३१८. (D) एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि — टिप्पणीक पहिल संकेत “एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि” अछि।
३१९. (A) एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि” रूपमे देखाइत अछि।

३२०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२२. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२४. (B) खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘उजड़ैत गाम: बसैत शहर?’” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२५. (A) 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका' — सूचकांक पंक्ति 2190मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका’” रूपमे देल अछि।
३२६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
३२८. (D) कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” अछि।
३२९. (A) कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
३३०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३४. (B) खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका’” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३५. (A) 'अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण' — सूचकांक पंक्ति 2191मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण’” रूपमे देल अछि।
३३६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३७. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
३३८. (D) मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग” अछि।
३३९. (A) मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।
३४०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४२. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४४. (B) खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण’” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४५. (A) 'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज) — सूचकांक पंक्ति 2192मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्टाज)’” रूपमे देल अछि।
३४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४७. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
३४८. (D) भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” अछि।
३४९. (A) भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” रूपमे देखाइत अछि।
३५०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५२. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५४. (B) खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन’ (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५५. (A) ‘अतीत’ (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2193मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘अतीत’ (कविता)” रूपमे देल अछि।
३५६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५७. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३५८. (D) दार्शनिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।
३५९. (A) दार्शनिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।
३६०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६२. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६४. (B) खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘अतीत’ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६५. (A) ‘आस’ (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2194मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘आस’ (कविता)” रूपमे देल अछि।
३६६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६७. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३६८. (D) आशावादी — टिप्पणीक पहिल संकेत “आशावादी” अछि।
३६९. (A) आशावादी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशावादी” रूपमे देखाइत अछि।
३७०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७२. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७४. (B) खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “‘आस’ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७५. (A) ‘लोरी’ (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2195मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘लोरी’ (कविता)” रूपमे देल अछि।
३७६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७७. (C) कविता/लोरी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लोरी” अछि।
३७८. (D) दलित-शोषित जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित-शोषित जीवन” अछि।
३७९. (A) दलित-शोषित जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित-शोषित जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
३८०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोरी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८२. (D) ई पाठ कविता/लोरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८४. (B) खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लोरी आ “दलित-शोषित जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८५. (A) 'आह्वान' (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2196मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'आह्वान' (कविता)” रूपमे देल अछि।
३८६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८७. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३८८. (D) देशभक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।
३८९. (A) देशभक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
३९०. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९२. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९४. (B) खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९५. (A) 'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद) — सूचकांक पंक्ति 2197मे प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।
३९६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९७. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
३९८. (D) डोगरी-मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “डोगरी-मैथिली” अछि।
३९९. (A) डोगरी-मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डोगरी-मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
४००. (B) लेखक प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०२. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०४. (B) खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197मे प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “डोगरी-मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४०५. (A) 'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद) — सूचकांक पंक्ति 2198मे कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।
४०६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०७. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
४०८. (D) बाल कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल कविता” अछि।
४०९. (A) बाल कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।
४१०. (B) लेखक कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१२. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१४. (B) खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198मे कुमार संभव 'भारद्वाज' / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१५. (A) 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2199मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” रूपमे देल अछि।
४१६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१७. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४१८. (D) मैथिलीक पहचानक प्रश्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक पहचानक प्रश्न” अछि।
४१९. (A) मैथिलीक पहचानक प्रश्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलीक पहचानक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।
४२०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२२. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२४. (B) खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैथिलीक पहचानक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२५. (A) 'सोधनपाल' (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2200मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'सोधनपाल' (कविता)” रूपमे देल अछि।
४२६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२७. (C) कविता/लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लघुकथा” अछि।
४२८. (D) बाल-मनोविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।
४२९. (A) बाल-मनोविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
४३०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३२. (D) ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३४. (B) खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘सोधनपाल’ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लघुकथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३५. (A) ‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2201मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” रूपमे देल अछि।
४३६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३७. (C) कविता/पत्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/पत्र” अछि।
४३८. (D) सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित — टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” अछि।
४३९. (A) सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” रूपमे देखाइत अछि।
४४०. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४२. (D) ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४४. (B) खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “‘प्रियवर सम्पादकजी’ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ४ : विदेह-सदेह २७ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड १८ : विदेह-सदेह २७ — तेलुगु अनुवाद 'जुम्मा'

१. विदेह-सदेह २७ क मुख्य खण्डक नाम की?
 - (A) तेलुगु कथा खण्ड
 - (B) अंग्रेजी कथा खण्ड
 - (C) रूसी नाट्य खण्ड
 - (D) कोनो नहि
२. 'जुम्मा' लघुकथाक मूल तेलुगु लेखक के छथि?
 - (A) शेख मोहम्मद शरीफ प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ
 - (B) गजेन्द्र ठाकुर
 - (C) जयलक्ष्मी पोपुरी
 - (D) कोनो नहि
३. 'जुम्मा' क तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद के केलनि?
 - (A) जयलक्ष्मी पोपुरी
 - (B) गजेन्द्र ठाकुर
 - (C) प्रीति ठाकुर
 - (D) कोनो नहि
४. 'जुम्मा' क अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद के केलनि?
 - (A) गजेन्द्र ठाकुर
 - (B) जयलक्ष्मी पोपुरी
 - (C) विभा रानी
 - (D) कोनो नहि
५. 'जुम्मा' कथाक मुख्य घटना कोन दिनसँ सम्बद्ध अछि?
 - (A) जुम्माक नमाज (शुक्रवार)
 - (B) रविवार
 - (C) सोमवार
 - (D) कोनो नहि
६. 'जुम्मा' कथामे नायकक पिताक संग की घटना घटैत अछि?
 - (A) हुनकर मृत्युक सूचना आबैत अछि
 - (B) ओ बिमार पड़ैत छथि
 - (C) ओ यात्रापर जाइत छथि
 - (D) कोनो नहि
७. 'जुम्मा' कथाक भावनात्मक केन्द्र की थिक?
 - (A) आस्था, अपराध-भाव आ माय-बेटाक सम्बन्ध
 - (B) केवल हास्य
 - (C) केवल राजनीति
 - (D) कोनो नहि
८. विदेह-सदेह २७ सन तेलुगु-अनुवाद-संकलन की देखबैत अछि?
 - (A) विदेहक अनुवाद-कार्य आ अन्तर्भाषिक सेतु-निर्माणक प्रतिबद्धता
 - (B) केवल मैथिली रचना
 - (C) निरर्थकता
 - (D) रोक

खण्ड 3511 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)

१. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली

१३. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद/कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” के विदेह-सदेह 27क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202मे गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद/कथा आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3512 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

१९. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली

२३. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२४. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२५. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२६. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
(D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
२७. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२८. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203मे गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- खण्ड 3513 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)**
२९. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
- (A) हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली

३३. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204मे गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3514 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

३९. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली

४३. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205मे गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3515 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

४९. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली

५३. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206मे गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3516 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)

५९. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली

६३. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207मे गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3517 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

६९. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली

७३. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208मे गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3518 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

७९. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली

८३. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रचना/लेखकका कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209मे गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3519 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)

८९. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली

९३. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९७. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210मे गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3520 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)

९९. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली

१०३. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०७. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211मे गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3521 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)

१०९. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली

११३. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११७. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3522 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)

११९. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली

१२३. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२७. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213मे गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3523 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)

१२९. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली

१३३. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३७. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214मे गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3524 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)

१३९. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली

१४३. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४७. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215मे गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3525 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)

१४९. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली

१५३. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५७. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216मे गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3526 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)

१५९. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली

१६३. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६७. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217मे गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3527 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)

१६९. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) पद्य
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१७१. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) अनुवाद/बिरहा
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१७२. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) भोजपुरी → मैथिली
१७३. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) भोजपुरी → मैथिली
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१७४. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/बिरहा
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१७५. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१७६. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ अनुवाद/बिरहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७७. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218मे गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/बिरहा आ “भोजपुरी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3528 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)

१७९. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली

१८३. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८७. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219मे गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3529 : विदेह-सदेह 27 — रवि भूषण पाठक: निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद

१८९. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कवि: निराला

१९३. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कवि: निराला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”कें विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद/आलोचनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९७. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220मे रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/आलोचना आ “कवि: निराला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) तेलुगु कथा खण्ड — विदेह-सदेह २७ क मुख्य खण्ड ‘तेलुगु कथा खण्ड’ थिक।
२. (A) शेख मोहम्मद शरीफ प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ — ‘जुम्मा’ लघुकथाक मूल तेलुगु लेखक शेख मोहम्मद शरीफ प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ छथि।
३. (A) जयलक्ष्मी पोपुरी — जयलक्ष्मी पोपुरी, निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयक अध्यापिका, तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद केलीह।
४. (A) गजेन्द्र ठाकुर — ‘जुम्मा’ क अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर केलनि।
५. (A) जुम्माक नमाज (शुक्रवार) — कथाक मुख्य घटना जुम्माक नमाज (शुक्रवारक नमाज) सँ सम्बद्ध अछि — कथा-नायकक अम्मी जुम्माक नमाजकें विशेष आस्थासँ देखैत छलीह।
६. (A) हुनकर मृत्युक सूचना आबैत अछि — कथामे नायकक पिताक मृत्युक सूचना फोनपर आबैत अछि, जे नायककें अम्मीक मार्फत भेटैत अछि।
७. (A) आस्था, अपराध-भाव आ माय-बेटाक सम्बन्ध — कथाक भावनात्मक केन्द्र आस्था, नायकक अपराध-भाव (मस्जिद नहि गेलाक) आ माय-बेटाक गहिर सम्बन्ध थिक।
८. (B) केवल मैथिली रचना — विदेह-सदेह २७ देखबैत अछि जे विदेह तेलुगु सन भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद कऽ अन्तर्भाषिक सेतु-निर्माणक प्रति प्रतिबद्ध अछि।
९. (A) जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ) — सूचकांक पंक्ति 2202मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” रूपमे देल अछि।
१०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११. (C) अनुवाद/कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कथा” अछि।
१२. (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
१३. (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
१४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद/कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६. (D) ई पाठ अनुवाद/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८. (B) खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202मे गजेन्द्र ठाकुरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद/कथा आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९. (A) गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी) — सूचकांक पंक्ति 2203मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रूपमे देल अछि।
२०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
२२. (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
२३. (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

२४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८. (B) खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203मे गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९. (A) हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी) — सूचकांक पंक्ति 2204मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रूपमे देल अछि।
३०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
३२. (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
३३. (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
३४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८. (B) खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204मे गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९. (A) फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी) — सूचकांक पंक्ति 2205मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रूपमे देल अछि।
४०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
४२. (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
४३. (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
४४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८. (B) खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205मे गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९. (A) अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी) — सूचकांक पंक्ति 2206मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रूपमे देल अछि।
५०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
५२. (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
५३. (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
५४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८. (B) खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206मे गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९. (A) हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी) — सूचकांक पंक्ति 2207मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” रूपमे देल अछि।
६०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
६२. (D) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
६३. (A) ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
६४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८. (B) खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207मे गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६९. (A) अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर) — सूचकांक पंक्ति 2208मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रूपमे देल अछि।
७०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
७२. (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
७३. (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
७४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७८. (B) खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208मे गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ

प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७९. (A) पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर) — सूचकांक पंक्ति 2209मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रूपमे देल अछि।

८०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

८२. (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।

८३. (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

८४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८८. (B) खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209मे गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८९. (A) पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी) — सूचकांक पंक्ति 2210मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” रूपमे देल अछि।

९०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

९२. (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।

९३. (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

९४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९८. (B) खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210मे गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९९. (A) ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा) — सूचकांक पंक्ति 2211मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” रूपमे देल अछि।

१००. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

१०२. (D) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।

१०३. (A) तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

१०४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करवैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०८. (B) खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211मे गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०९. (A) समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ) — सूचकांक पंक्ति 2212मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” रूपमे देल अछि।
११०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१११. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
११२. (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
११३. (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
११४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करवैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११८. (B) खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११९. (A) अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया) — सूचकांक पंक्ति 2213मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” रूपमे देल अछि।
१२०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
१२२. (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
१२३. (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
१२४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करवैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२८. (B) खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213मे गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२९. (A) बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल) — सूचकांक पंक्ति 2214मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” रूपमे देल अछि।
१३०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
१३२. (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
१३३. (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

१६१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
१६२. (D) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
१६३. (A) गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
१६४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६८. (B) खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217मे गजेन्द्र ठाकुरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६९. (A) वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर) — सूचकांक पंक्ति 2218मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” रूपमे देल अछि।
१७०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७१. (C) अनुवाद/बिरहा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/बिरहा” अछि।
१७२. (D) भोजपुरी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजपुरी → मैथिली” अछि।
१७३. (A) भोजपुरी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोजपुरी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
१७४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/बिरहा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७६. (D) ई पाठ अनुवाद/बिरहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७८. (B) खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218मे गजेन्द्र ठाकुरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/बिरहा आ “भोजपुरी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७९. (A) छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही) — सूचकांक पंक्ति 2219मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” रूपमे देल अछि।
१८०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८१. (C) अनुवाद/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।
१८२. (D) कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली” अछि।
१८३. (A) कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।
१८४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८६. (D) ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८८. (B) खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219मे गजेन्द्र ठाकुरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “कश्मीरी → अंग्रेजी → मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें

प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८९. (A) निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद — सूचकांक पंक्ति 2220मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” रूपमे देल अछि।

१९०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९१. (C) अनुवाद/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/आलोचना” अछि।

१९२. (D) कवि: निराला — टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि: निराला” अछि।

१९३. (A) कवि: निराला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि: निराला” रूपमे देखाइत अछि।

१९४. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९६. (D) ई पाठ अनुवाद/आलोचनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९८. (B) खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220मे रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/आलोचना आ “कवि: निराला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ५ : विदेह-सदेह २८ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २१ : विदेह-सदेह २८ — बहुभाषिक अनुवाद-संकलन (खण्ड-१)

१. विदेह-सदेह २८ क पूर्ण शीर्षक की?
(A) गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-१
(B) केवल अनुवाद
(C) विदेह सदेह
(D) कोनो नहि
२. विदेह-सदेह २८ मे खलील जिब्रानक रचनाक नाम की?
(A) गोल्डन बेल्ट (अंग्रेजी सीड स्टोरी)
(B) जुम्मा
(C) छिन्नमस्ता
(D) कोनो नहि
३. विदेह-सदेह २८ मे बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन नाटककार) क रचनाक नाम की?
(A) गपशप, महाशय 'क' जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि
(B) जुम्मा
(C) छिन्नमस्ता
(D) कोनो नहि
४. विदेह-सदेह २८ मे डॉ. प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक नाम की?
(A) छिन्नमस्ता
(B) रेहनपर रघू
(C) मोहनदास
(D) कोनो नहि
५. विदेह-सदेह २८ मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी नाटककार) क रचनाक नाम की?
(A) एकटा ईमानदार आदमी
(B) छिन्नमस्ता
(C) गोल्डन बेल्ट
(D) कोनो नहि
६. विदेह-सदेह २८ मे कुरानक कोन भाग अनूदित अछि?
(A) पहिल अध्यायक सात आयत
(B) सम्पूर्ण कुरान
(C) अन्तिम अध्याय
(D) कोनो नहि
७. विदेह-सदेह २८ मे उदय प्रकाशक हिन्दी दीर्घकथाक नाम की?
(A) मोहनदास
(B) रेहनपर रघू
(C) छिन्नमस्ता
(D) कोनो नहि
८. विदेह-सदेह २८ मे काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यासक नाम की?
(A) रेहनपर रघू
(B) मोहनदास
(C) छिन्नमस्ता
(D) कोनो नहि

९. तुकाराम रामा शेटक 'पाखलो' कोन भाषाक उपन्यास थिक?

- (A) कोंकणी
- (B) तेलुगु
- (C) ओड़िया
- (D) कोनो नहि

१०. निरालाक हिन्दी कविताक नाम की, जे विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि?

- (A) देह विदेह
- (B) मोहनदास
- (C) छिन्नमस्ता
- (D) कोनो नहि

११. मंगलेश डबरालक कतेक हिन्दी कविता विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि?

- (A) अनेक (बारहसँ बेशी कविता-शीर्षक)
- (B) एक
- (C) दू
- (D) कोनो नहि

१२. रहमान राहीक 'छाह सभ' कोन भाषाक कविता थिक?

- (A) कश्मीरी
- (B) पंजाबी
- (C) डोगरी
- (D) कोनो नहि

१३. भिखारी ठाकुरक 'वृद्धाश्रमक पक्षमे' कोन भाषाक रचना थिक?

- (A) भोजपुरी (बिरहा)
- (B) मैथिली
- (C) हिन्दी
- (D) कोनो नहि

१४. विदेह-सदेह २८ मे कतेक-कतेक भारतीय भाषाक रचना सम्मिलित अछि?

- (A) अनेक (तेलुगु, हिन्दी, कोंकणी, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी आदि)
- (B) केवल दू
- (C) केवल हिन्दी
- (D) कोनो नहि

१५. विदेह-सदेह २८ क समर्पण-पाँती 'समानांतर कात-करोट मे हएब नै अछि' कतय आओर भेटल अछि?

- (A) विदेहक ४४०म अंकमे सेहो
- (B) केवल एतय
- (C) कोनो आर ठाम नहि
- (D) कोनो नहि

खण्ड 3530 : विदेह-सदेह 28 — शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु): जुम्मा

१६. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क "जुम्मा" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जुम्मा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।

२०. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221मे शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3531 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर:

२६. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” के विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222मे अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3532 : विदेह-सदेह 28 — डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी): छिन्नमस्ता

३५. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छिन्नमस्ता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उपन्यास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।

३९. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223मे डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3533 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सुशीला झा:

४५. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: सुशीला झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224मे अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3534 : विदेह-सदेह 28 — खलील जिब्रान (अंग्रेजी): गोल्डन बेल्ट

५४. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गोल्डन बेल्ट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रतीकात्मक कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी

५८. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक खलील जिब्रान (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा प्रतीकात्मक कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रतीकात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225मे खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि गद्य, प्रतीकात्मक कथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3535 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

६४. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3536 : विदेह-सदेह 28 — ग्रिगोरी गोरिन (रूसी): एकटा ईमानदार आदमी

७३. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकटा ईमानदार आदमी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटकीय लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त

७७. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ग्रिगोरी गोरिन (रूसी), विधा गद्य, उप-विधा नाटकीय लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटकीय लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि गद्य, नाटकीय लघुकथा आ “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3537 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

८३. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९०. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3538 : विदेह-सदेह 28 — बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन): गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि

९२. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रयोगात्मक कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग

९६. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रयोगात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१००. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229मे बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक कथा आ “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3539 : विदेह-सदेह 28 — विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा): शरीरक मूल्य

१०२. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शरीरक मूल्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लोक बालबोधिनी कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपनिषदीय दृष्टि

१०६. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपनिषदीय दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा), विधा गद्य, उप-विधा लोक बालबोधिनी कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लोक बालबोधिनी कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११०. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230मे विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, लोक बालबोधिनी कथा आ “उपनिषदीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3540 : विदेह-सदेह 28 — देवज्ञत बसु (संस्कृत): सुख केँ मृगमरीचिका बुझू

११२. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख केँ मृगमरीचिका बुझू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुख केँ मृगमरीचिका बुझू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख केँ मृगमरीचिका बुझू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) दार्शनिक लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।

११६. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक देवज्ञत बसु (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२०. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231मे देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3541 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विपिन कुमार झा:

१२२. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विपिन कुमार झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232मे अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3542 : विदेह-सदेह 28 — डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत): वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्

१३१. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्कृत लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’कें ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।

१३५. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’कें ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकै की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्कृत लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233मे डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत लघुकथा आ “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’कँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3543 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. योगानन्द झा:

१४१. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. योगानन्द झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234मे अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3544 : विदेह-सदेह 28 — असगर वजाहत (हिन्दी): हम हिन्दू छी

१५०. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हम हिन्दू छी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साम्प्रदायिक लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि

१५४. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक असगर वजाहत (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा साम्प्रदायिक लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साम्प्रदायिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235मे असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि गद्य, साम्प्रदायिक लघुकथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3545 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

१६०. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६७. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3546 : विदेह-सदेह 28 — आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी): कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत

१६९. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) धार्मिक अनुवाद
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु

१७३. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा धार्मिक अनुवाद
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ धार्मिक अनुवादक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७७. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237मे आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि पद्य/गद्य, धार्मिक अनुवाद आ “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3547 : विदेह-सदेह 28 — तुकाराम रामा शेट (कोंकणी): पाखलो

१७९. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पाखलो
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उपन्यास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठल’ आन्तरिक पहिचान।

१८३. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठल’ आन्तरिक पहिचान।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८७. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238मे तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठुल’ आन्तरिक पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3548 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

१८९. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९६. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3549 : विदेह-सदेह 28 — अशोक मनभुटकर (कोंकणी): हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’

१९८. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षात्मक आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण

२०२. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अशोक मनभुटकर (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षात्मक आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षात्मक आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०६. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240मे अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षात्मक आलेख आ “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3550 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

२०८. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१५. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3551 : विदेह-सदेह 28 — हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी): मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग

२१७. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन

२२१. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग" प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग"कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२५. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग" प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242मे हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' (हिन्दी)क "मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग" प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ "पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3552 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

२२७. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”कँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३४. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3553 : विदेह-सदेह 28 — उदय प्रकाश (हिन्दी): मोहनदास

२३६. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मोहनदास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) दीर्घ कथा / उपन्यास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकेत।

२४०. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उदय प्रकाश (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा / उपन्यास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ दीर्घ कथा / उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४४. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244मे उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा / उपन्यास आ “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ५ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-१ — विदेह-सदेह २८ क पूर्ण शीर्षक ‘गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-१’ थिक — विदेहक अंक १-३५० सँ अनूदित गद्य-पद्यक पहिल खण्ड।

२. (A) गोल्डन बेल्ट (अंग्रेजी सीड स्टोरी) — खलील जिब्रानक रचना ‘गोल्डन बेल्ट’ (अंग्रेजी सीड स्टोरी) विदेह-सदेह २८ मे सम्मिलित अछि।

३. (A) गपशप, महाशय ‘क’ जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि — बर्तोल्त ब्रेख्तक रचना ‘गपशप, महाशय क जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि’ विदेह-सदेह २८ मे सम्मिलित अछि।

४. (A) छिन्नमस्ता — डॉ. प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यास ‘छिन्नमस्ता’ विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

५. (A) एकटा ईमानदार आदमी — रूसी नाटककार ग्रिगोरी गोरीनक रचना ‘एकटा ईमानदार आदमी’ विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

६. (A) पहिल अध्यायक सात आयत — कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत अरबी-हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूदित अछि।
७. (A) मोहनदास — उदय प्रकाशक हिन्दी दीर्घकथा 'मोहनदास' विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।
८. (A) रेहनपर रग्घू — काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यास 'रेहनपर रग्घू' विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।
९. (A) कोंकणी — 'पाखलो' तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यास थिक, जे विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।
१०. (A) देह विदेह — निरालाक हिन्दी कविता 'देह विदेह' (१-४) विदेह-सदेह २८ मे मैथिलीमे अनूदित अछि।
११. (A) अनेक (बारहसँ बेशी कविता-शीर्षक) — मंगलेश डबरालक अनेक कविता — कमरा, बाहर, उम्मीद, पहाड़ छथिन आदि — विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।
१२. (A) कश्मीरी — 'छाह सभ' रहमान राहीक कश्मीरी कविता थिक।
१३. (A) भोजपुरी (बिरहा) — भिखारी ठाकुरक 'वृद्धाश्रमक पक्षमे' भोजपुरी बिरहा-शैलीक रचना थिक।
१४. (A) अनेक (तेलुगु, हिन्दी, कोंकणी, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी आदि) — विदेह-सदेह २८ मे तेलुगु, हिन्दी, कोंकणी, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी सन अनेक भारतीय भाषाक रचना अनूदित-संकलित अछि।
१५. (A) विदेहक ४४०म अंकमे सेहो — ई समर्पण-पाँती विदेहक ४४०म अंकमे सेहो भेटल अछि, जे विदेह-आन्दोलनक एक स्थिर, दोहराओल जाइत मूल-दर्शन देखबैत अछि।
१६. (A) जुम्मा — सूचकांक पंक्ति 2221मे शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क प्रविष्टि "जुम्मा" रूपमे देल अछि।
१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "लघुकथा" अछि।
१९. (D) स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच 'अल्ला-मस्जिद' सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: 'जुम्मा नहि जाएब' मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता। — टिप्पणीक पहिल संकेत "स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच 'अल्ला-मस्जिद' सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: 'जुम्मा नहि जाएब' मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।" अछि।
२०. (A) स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच 'अल्ला-मस्जिद' सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: 'जुम्मा नहि जाएब' मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच 'अल्ला-मस्जिद' सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: 'जुम्मा नहि जाएब' मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।" रूपमे देखाइत अछि।
२१. (B) लेखक शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५. (B) खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221मे शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क "जुम्मा" प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ "स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच 'अल्ला-मस्जिद' सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: 'जुम्मा नहि जाएब' मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2222मे अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि "" रूपमे देल अछि।
२७. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें "साहित्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "प्रविष्टि" अछि।
२९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "" रूपमे देखाइत अछि।
३०. (B) लेखक अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४. (B) खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222मे अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५. (A) छिन्नमस्ता — सूचकांक पंक्ति 2223मे डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क प्रविष्टि “छिन्नमस्ता” रूपमे देल अछि।
३६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७. (C) उपन्यास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।
३८. (D) स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” अछि।
३९. (A) स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” रूपमे देखाइत अछि।
४०. (B) लेखक डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२. (D) ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४. (B) खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223मे डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2224मे अनुवाद: सुशीला झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४६. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४९. (B) लेखक अनुवाद: सुशीला झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३. (B) खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224मे अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४. (A) गोल्डन बेल्ट — सूचकांक पंक्ति 2225मे खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क प्रविष्टि “गोल्डन बेल्ट” रूपमे देल अछि।
५५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६. (C) प्रतीकात्मक कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतीकात्मक कथा” अछि।
५७. (D) उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी — टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” अछि।

५८. (A) उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” रूपमे देखाइत अछि।
५९. (B) लेखक खलील जिब्रान (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा प्रतीकात्मक कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६१. (D) ई पाठ प्रतीकात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३. (B) खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225मे खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि गद्य, प्रतीकात्मक कथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2226मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
६५. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६६. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
६८. (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७०. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२. (B) खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३. (A) एकटा ईमानदार आदमी — सूचकांक पंक्ति 2227मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क प्रविष्टि “एकटा ईमानदार आदमी” रूपमे देल अछि।
७४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७५. (C) नाटकीय लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटकीय लघुकथा” अछि।
७६. (D) मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” अछि।
७७. (A) मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” रूपमे देखाइत अछि।
७८. (B) लेखक ग्रिगोरी गोरिन (रूसी), विधा गद्य, उप-विधा नाटकीय लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०. (D) ई पाठ नाटकीय लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२. (B) खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि गद्य, नाटकीय लघुकथा आ “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2228मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
८४. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८५. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८७. (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९१. (B) खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९२. (A) गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि — सूचकांक पंक्ति 2229मे बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क प्रविष्टि “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” रूपमे देल अछि।
९३. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९४. (C) प्रयोगात्मक कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रयोगात्मक कथा” अछि।
९५. (D) ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” अछि।
९६. (A) ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” रूपमे देखाइत अछि।
९७. (B) लेखक बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९९. (D) ई पाठ प्रयोगात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१००. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०१. (B) खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229मे बर्तोल्त ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक कथा आ “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०२. (A) शरीरक मूल्य — सूचकांक पंक्ति 2230मे विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क प्रविष्टि “शरीरक मूल्य” रूपमे देल अछि।
१०३. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०४. (C) लोक बालबोधिनी कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक बालबोधिनी कथा” अछि।
१०५. (D) उपनिषदीय दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपनिषदीय दृष्टि” अछि।
१०६. (A) उपनिषदीय दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपनिषदीय दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।
१०७. (B) लेखक विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा), विधा गद्य, उप-विधा लोक बालबोधिनी कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०९. (D) ई पाठ लोक बालबोधिनी कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१११. (B) खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230मे विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, लोक बालबोधिनी कथा आ “उपनिषदीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११२. (A) सुख के मृगमरीचिका बुद्धू — सूचकांक पंक्ति 2231मे देवज्ञत बसु (संस्कृत)क प्रविष्टि “सुख के मृगमरीचिका बुद्धू” रूपमे देल अछि।
११३. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११४. (C) दार्शनिक लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक लघुकथा” अछि।
११५. (D) भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” अछि।
११६. (A) भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” रूपमे देखाइत अछि।
११७. (B) लेखक देवज्ञत बसु (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११९. (D) ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२१. (B) खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231मे देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख के मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2232मे अनुवाद: विपिन कुमार झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१२३. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२४. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१२५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१२६. (B) लेखक अनुवाद: विपिन कुमार झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०. (B) खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232मे अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१. (A) वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत् — सूचकांक पंक्ति 2233मे डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क प्रविष्टि “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” रूपमे देल अछि।
१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३. (C) संस्कृत लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्कृत लघुकथा” अछि।
१३४. (D) स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” अछि।
१३५. (A) स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” रूपमे देखाइत अछि।
१३६. (B) लेखक डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८. (D) ई पाठ संस्कृत लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233मे डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत लघुकथा आ “स्त्री-परामर्शः माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’कें ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2234मे अनुवादः डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१४२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१४४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१४५. (B) लेखक अनुवादः डॉ. योगानन्द झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९. (B) खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234मे अनुवादः डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५०. (A) हम हिन्दू छी — सूचकांक पंक्ति 2235मे असगर वजाहत (हिन्दी)क प्रविष्टि “हम हिन्दू छी” रूपमे देल अछि।
१५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२. (C) साम्प्रदायिक लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साम्प्रदायिक लघुकथा” अछि।
१५३. (D) उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहासः सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि — टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहासः सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” अछि।
१५४. (A) उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहासः सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहासः सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” रूपमे देखाइत अछि।
१५५. (B) लेखक असगर वजाहत (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा साम्प्रदायिक लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७. (D) ई पाठ साम्प्रदायिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९. (B) खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235मे असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि गद्य, साम्प्रदायिक लघुकथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहासः सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2236मे अनुवादः विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१६१. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१६३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१६४. (B) लेखक अनुवादः विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६८. (B) खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६९. (A) कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत — सूचकांक पंक्ति 2237मे आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क प्रविष्टि “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” रूपमे देल अछि।
१७०. (B) पद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७१. (C) धार्मिक अनुवाद — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “धार्मिक अनुवाद” अछि।
१७२. (D) अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु — टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” अछि।
१७३. (A) अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” रूपमे देखाइत अछि।
१७४. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा धार्मिक अनुवाद — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७६. (D) ई पाठ धार्मिक अनुवादक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७८. (B) खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237मे आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि पद्य/गद्य, धार्मिक अनुवाद आ “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७९. (A) पाखलो — सूचकांक पंक्ति 2238मे तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क प्रविष्टि “पाखलो” रूपमे देल अछि।
१८०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८१. (C) उपन्यास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।
१८२. (D) विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठुल’ आन्तरिक पहिचान। — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठुल’ आन्तरिक पहिचान।” अछि।
१८३. (A) विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठुल’ आन्तरिक पहिचान। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठुल’ आन्तरिक पहिचान।” रूपमे देखाइत अछि।
१८४. (B) लेखक तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८६. (D) ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८८. (B) खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238मे तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठुल’ आन्तरिक पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2239मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१९०. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९१. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

१९२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

१९३. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१९४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१९६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९७. (B) खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९८. (A) हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’ — सूचकांक पंक्ति 2240मे अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क प्रविष्टि “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” रूपमे देल अछि।

१९९. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२००. (C) समीक्षात्मक आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षात्मक आलेख” अछि।

२०१. (D) पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” अछि।

२०२. (A) पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” रूपमे देखाइत अछि।

२०३. (B) लेखक अशोक मनभुटकर (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षात्मक आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२०४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०५. (D) ई पाठ समीक्षात्मक आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२०६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०७. (B) खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240मे अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षात्मक आलेख आ “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2241मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

२०९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

२११. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

२१२. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२१५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१६. (B) खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१७. (A) मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग — सूचकांक पंक्ति 2242मे हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क प्रविष्टि “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग” रूपमे देल अछि।

२१८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१९. (C) जीवनी/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।

२२०. (D) पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन — टिप्पणीक पहिल संकेत “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” अछि।

२२१. (A) पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” रूपमे देखाइत अछि।

२२२. (B) लेखक हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२४. (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२६. (B) खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242मे हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृङ्ग” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2243मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

२२८. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२९. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

२३०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

२३१. (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३३. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३५. (B) खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३६. (A) मोहनदास — सूचकांक पंक्ति 2244मे उदय प्रकाश (हिन्दी)क प्रविष्टि “मोहनदास” रूपमे देल अछि।

२३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३८. (C) दीर्घ कथा / उपन्यास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कथा / उपन्यास” अछि।

२३९. (D) उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट। — टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” अछि।

२४०. (A) उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” रूपमे देखाइत अछि।

२४१. (B) लेखक उदय प्रकाश (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा / उपन्यास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४३. (D) ई पाठ दीर्घ कथा / उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४५. (B) खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244मे उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा / उपन्यास आ “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।